प्रीतिरसावतार महाभावनिमग्न श्रीराधा बाबा

(प्रथम भाग)

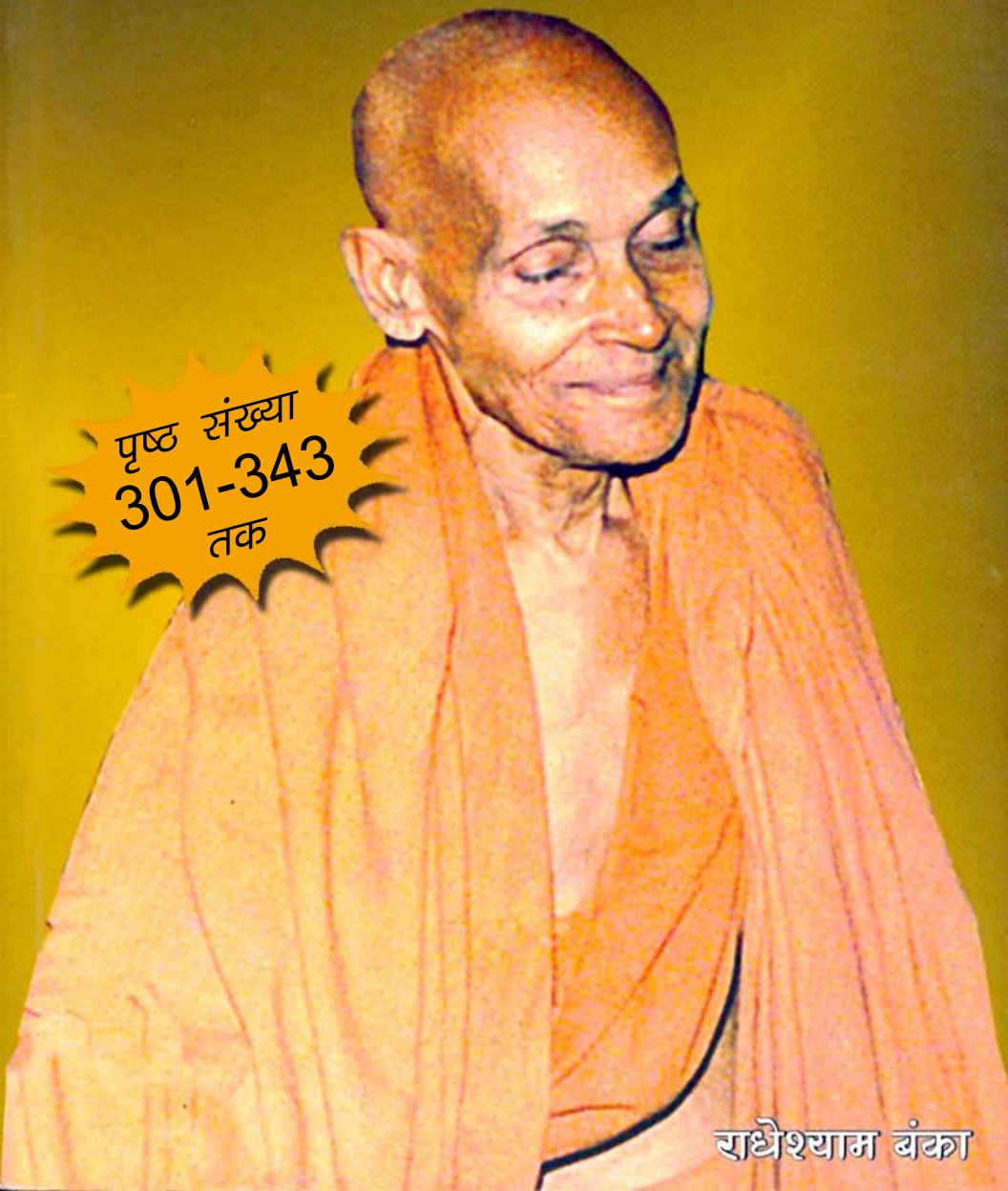

पृष्ठ संख्या 301-343 तक

राधेश्याम बंका

बाबाने भी उसी स्थिरताके साथ निवेदन किया – चाहे कितनी ही देर हो, पर यह कैसे हो सकता है कि दर्शन किये बिना भिक्षा कर लूँ? पट पाँच बजे खुलेगा। उसके बाद जैसा होगा, देख लिया जायेगा।

बाबाका उत्तर सुनकर बाबूजी चुप बैठ गये तथा कल्याणका प्रूफ देखने लगे। इसी बीच किसीने श्रीकनकभवनके अधिकारियोंको बतला दिया कि 'कल्याण' सम्पादक श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार बरामदेमें बैठे हैं और उनको किसी उत्तम स्थानपर ठहराना चाहिये। ऐसी जानकारी मिलते ही तुरन्त एक अच्छा कमरा खोल दिया गया। उसकी सफाई भली प्रकार तत्काल करवा दी गयी। एक कलशा सरयूजलका भी रखवा दिया गया। यह व्यवस्था देखकर बाबूजीने अनुमान लगा लिया कि शायद किसीने मेरे आनेकी जानकारी दे दी है। जानकारीका दिया जाना बाबूजीको प्रिय नहीं लगा, पर उस व्यवस्थाको अस्वीकार करना भी उचित नहीं लगा। अस्तु, सबने आकर कमरेमें स्थान ग्रहण किया। जब कमरा मिल गया तो फिर बाबूजीने बाबासे पूछा – अब तो स्थानकी व्यवस्था हो गयी है, अतः क्यों नहीं भिक्षा बनवानेका कार्य आरम्भ कर दिया जाय, जिससे दर्शनके बाद तुरन्त भिक्षा हो सके।

बाबाने अपनी ओरसे सहमति व्यक्त कर दी। उसी कमरेमें भिक्षाके रन्धनका कार्य होने लगा।

शामको पाँच बजे श्रीकनकबिहारीजीके पट खुले। उस दिन कोई उत्सव नहीं था। कोई विशेष दिवस भी नहीं था, पर भीड़की सीमा नहीं। इतनी अधिक भीड़ थी कि क्या कहा जाय? बाबाके लिये यह सम्भव नहीं हो सका कि उस भीड़में जाकर दर्शन कर सकें। बाबा गये दर्शन करनेके लिये, पर भीड़की अधिकता देखकर अपने कमरेकी ओर लौट आये। कमरेके बाहर बरामदेमें बैठकर बाबा श्रीकनकबिहारीजीसे मन-ही-मन कहने लगे – आप तो राजराजेश्वर त्रिलोकीनाथ भगवान रामचन्द्र हैं। इतनी भीड़में मेरे द्वारा दर्शन किया जा सकना कैसे सम्भव है? मेरे लिये शक्य है ही नहीं। अब आपको दर्शन देना हो तो दें। अन्यथा यह भी समझ लें कि बिना दर्शन किये मेरी भिक्षा भी नहीं हो सकेगी।

बाबा द्वारा ऐसा कहे जानेके थोड़ी देर बाद ही आश्चर्य यह हुआ

कि जहाँ बाबा बैठे थे, वहाँसे लेकर गर्भगृह (जहाँ श्रीकनकबिहारीजी बिराजमान थे, वहाँ) तकका स्थान बिल्कुल खाली हो गया, अर्थात् भीड़ दो भागमें बँट गयी। बाबावाले कमरेसे लेकर गर्भगृहतकका स्थान एकदम खाली हो गया। इस खाली स्थानके दाहिने-बाएँ लोग खड़े हैं, पर बाबाके सामनेका स्थान पूर्णतः खाली है और बाबाको स्पष्ट रूपसे श्रीकनकबिहारीजीके दर्शन होने लगे। बाबाने बतलाया – दर्शन पाकर तो मैं निहाल हो गया। इसके बाद गर्भगृहसे दो महिलाएँ निकलीं नितान्त तेजोमयी और अत्यधिक सुन्दरी। मेरा अनुमान है कि एक तो स्वयं जगज्जननी भगवती श्रीसीताजी होंगी तथा साथवाली उनकी सहचरी होंगी। वे गर्भगृहसे बाहर आकर रेलिंगके पास खड़ी हो गयीं। रेलिंगके सहारे खड़े होकर रेलिंगपर अपनी अँगुलियोंकी ताल देते हुए (मेरी ओर देखते हुए मुझे सम्बोधित करके) कहने लगीं कि बुरा मत मानना, भीड़में ऐसा हो ही जाया करता है। आजकल सभी तीर्थस्थलोंमें भीड़के कारण ऐसी ही अव्यवस्था रहा करती है। उनकी प्यार भरी वाणी सुनकर मेरा भाव जितना उमड़ा, मेरी जैसी भावविभोर स्थिति हो गयी, उसका वर्णन क्या बताऊँ? वस्तुतः ठाकुर और ठकुरानी दोनों प्यारके भूखे हैं, भावके भूखे हैं फिर तो वे निजजनके लिये क्या नहीं कर देंगे?

* * * * *

व्रजरज वटी

अपने परमात्मीय जनोंको प्रेरित करके बाबाने व्रजमण्डलके सभी मुख्य स्थानोंकी पावन रजका संग्रह करवाया था। संग्रहकी प्रक्रियाको देखकर बड़ा विस्मय होता है कि कितनी गहरी श्रद्धासे यह कार्य किया गया है। बाबाने सन् १९५६ में काष्ठ मौन व्रत लिया था। काष्ठ मौन व्रत लेनेके पूर्वतक प्रतिदिन बाबा इस व्रजरजका सेवन किया करते थे। काष्ठ मौनकी घोर अन्तर्मुखतामें इसका सेवन छूट गया। इसमें व्रज-भूमिके असंख्य स्थानोंकी रज सम्मिश्रित है।

जिन-जिन स्थानोंसे रज ली गयी है। उसका विवरण बाबाने लिखवाया है। हस्तलिखित विवरणकी नकल नीचे दी जा रही है –

१- व्रज-चौरासी-कोसकी यात्राके समस्त मार्गकी रज। चौरासी

कोसका व्रज-मण्डल श्रीगोलोककी ही भूमि है, अतएव अलौकिक (दिव्य) है। व्रज-यात्रा, जो चौरासी कोसकी यात्रा या वन-यात्रा भी कहलाती है, करनेसे संसारके सब तीर्थोंकी यात्रा हो जाती है, क्यों कि समस्त तीर्थ यहाँ व्रजरजका आश्रय लेकर निवास करते हैं, जैसे श्रीबदरीनारायणजी, रामेश्वरजी इत्यादि।

कई वर्ष पहले गोस्वामी श्री १०८ व्रजरत्नलालजी महाराजने व्रज-यात्रा की, जो ४९ दिनोंमें पूर्ण हुई थी। इस यात्रामें यात्रियोंको लगभग ३४० मील चलना पड़ा था। इस मार्गकी रज मिनट-मिनटके अन्तरपर बराबर ली गयी है।

२- व्रज-यात्रामें जो-जो सरोवर (कुण्ड) आये, उनकी गीली (यदि किसीमें जल नहीं था तो उसकी सूखी) रज। कम-से-कम पाँच-सात कुण्ड नित्य आते थे। समग्र व्रजमें ये कुण्ड हैं और शास्त्रोंमें इनका बहुत ही महत्त्व बतलाया गया है, जैसे राधाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, प्रेमसरोवर, क्षीरसागर, वृषभानुसर इत्यादि।

३- व्रज-यात्रामें जितने देव-मन्दिर आये, कम-से-कम पाँच-सात नित्य आते थे, उन स्थलोंकी रज।

४- मन्दिरोंमें जहाँ-जहाँ श्रीतुलसीजीके दर्शन हुए, वहाँसे ली गयी उनके मूलकी रज।

५- यात्रामें जितनी गंगाएँ हैं, उनकी गीली रज, जैसे मानसीगंगा, कृष्णगंगा, पाण्डवगंगा, अलकनन्दागंगा, चरणगंगा इत्यादि।

६- व्रज-चौरासी कोसमें श्रीयमुनाजीकी विभिन्न सैकड़ों स्थानोंसे ली गयी गीली रज।

७- व्रज-यात्रामें जहाँ-जहाँ श्रीराधाकृष्ण, श्रीदाऊजी आदिके चरण-चिह्न और अन्य कई प्रकारके दर्शनीय चिह्न आये, वहाँकी रज, जैसे चरण-पहाड़ी, व्योमासुरकी गुफा, भोजन-थाली इत्यादि।

८- श्रीलीलापुरुषोत्तमकी बहुत-सी लीला-स्थलीकी रज। व्रजमें श्रीनटनागरके अनेक लीला-विहार-स्थल हैं, जिनमें आपने भिन्न-भिन्न मधुरतम लीलायें की हैं, जैसे ऊखल-बंधन, मिट्टी-भक्षण, दान-लीला, मान-लीला आदि।

९- व्रज-यात्रामें जितने वन और कदम-खंडियाँ आयीं, उनकी रज। इनमें श्रीश्यामसुन्दरने महारास, गोचारण, आँखमिचौनी, प्रलम्बासुर बध, धेनुकासुर वध इत्यादि असंख्य लीलायें की हैं।

१०- श्रीरसिकविहारीकी लीलाओंसे सम्बन्धित व्रज-यात्राके वट, पीपल, ढाक, कदम्ब इत्यादि वृक्ष-स्थलोंसे ली हुई रज। व्रजमें अनेक महत्त्वपूर्ण और सौभाग्यशाली विटप हैं। इनके मूलकी रज, छायाकी रज और जहाँ मिली, वहाँ पेड़मेंसे रज ली गयी है, जैसे टेरकदम्ब, अक्षयवट, ऐंठाकदम्ब, संकेतवट इत्यादि।

११- व्रज-मण्डलमें बहुतसे महात्माओंकी तपोभूमियाँ और समाधि स्थल हैं, उनकी रज, जैसे सूरदासजीकी तपोभूमि चन्द्रसरोवरपर है और श्रीनारायण स्वामीजीकी समाधि कुसुमसरोवरपर है।

१२- व्रजभूमिमें कहीं-कहीं साक्षात्कारी साधु-महात्माओंके दर्शन हुए, उनके चरणारविन्दोंकी और निवास-स्थानोंकी रज, जैसे महात्मा श्रीरामकृष्णदासजी वृन्दावनमें।

१३- श्रीरासबिहारी युगल सरकार सहचरि-वृन्द सहित यात्राकी शोभा बढ़ा रहे थे, उनके चरणारविन्दकी रज।

१४- सम्पूर्ण व्रजमें महाप्रभु श्रीवल्लभचार्यजीने और वल्लभ कुलके अन्य महानुभावोंने जहाँ-जहाँ निवास किया एवं श्रीमद्भागवतकी कथा की थी, वहाँ-वहाँ उनकी बैठकें बनी हुई हैं, उन सबकी रज।

१५- श्रीहरिद्वारसे श्रीगंगाजीकी जो नहर व्रजमें आयी है, उसके विभिन्न स्थानोंसे ली गयी गीली रज।

१६- श्रीगिरिराज गोवर्द्धनजीकी रज। उनके श्रीविग्रहपरसे अनेक महत्त्वपूर्ण स्थानोंकी और उनकी परिक्रमा करके चारों ओरसे तलहटीकी चौदह मीलकी मिनट-मिनटके अन्तरपर ली गयी रज।

जतीपुरामें श्रीविग्रहपरसे श्रीनाथजी महाराजके प्राकट्य स्थानकी, नीचे श्रीगिरिराजजीके मुखारविन्दकी और गोवर्द्धन गाँवमेंसे उनके मन्दिरकी रज ली गयी है। श्रीगिरिराजजी श्रीव्रजराजके साक्षात् स्वरूप ही हैं, इसमें किंचित् भी संदेह नहीं।

१७- श्रीवृन्दावनके सैकड़ों स्थानोंकी रज। घाटोंकी, मन्दिरोंकी, सरोवरोंकी, लीलास्थलोंकी, महात्माओंके स्थानोंकी, समाधियोंकी, श्रीबिहारीजीका प्राकट्य हुआ था उस श्रीनिधिवनकी, श्रीयुगलसरकारके श्रीसेवाकुञ्ज नित्य-विहारस्थलकी, श्रीयमुनाजीके विभिन्न स्थानोंकी और श्रीवृन्दारण्यके चारों ओर परिक्रमा करके छः मीलके मार्गकी मिनट-मिनटके अन्तरपर रज ली गयी है।

१८- श्रीमथुराजीके बहुतसे स्थानोंकी रज। घाटोंकी, मन्दिरोंकी, सरोवरोंकी, कंसके टीले आदि लीला-स्थलोंकी और चारों ओर परिक्रमा करके आठ मीलके मार्गकी मिनट-मिनटके अन्तरपर रज ली गयी है।

१९- श्रीनाथजीके चरणामृतकी रज।

श्रीनाथद्वारेमें श्रीनाथजीके स्नानके जलमें कोई पवित्र रज मिलाकर चरणामृतके पेड़े बनाये जाते हैं। बहुतसे भक्त इनको पानीमें घोलकर नित्य चरणामृत लेते हैं। इस व्रज-रज-वटीमें इन पेड़ोंका भी पर्याप्त मात्रामें संयोग किया गया है।

२०- श्रीवृन्दावनके श्रीबाँकेविहारीजीके सर्वांगमें लेपन किया हुआ अक्षय तृतीयाका प्रसादी चन्दन।

२१- श्रीद्वारकाजीसे आया हुआ श्रीगोपीतलाईका गोपी चन्दन।

उपर्युक्त २१ तत्त्वोंका संयोग करके छानकर फिर इसको श्रीयमुना जलकी तीन भावना (पुट) देकर 'श्रीव्रजरज वटी' तैयार की गयी है।

इन श्रीव्रजरज वटीकी सेवन-विधि निम्नलिखित है।

श्रीयमुना जल आदिमें घोलकर अथवा सूखीका –

१- सर्वांगमें लेपन करना।

२- तिलक-स्वरूप धारण करना।

३- प्रसाद पाना।

इस रजमें गोपी चन्दन, श्रीठाकुरजीका प्रसादी चन्दन अथवा व्रजके किसी स्थानकी रज मिलाकर इसको बढ़ा लेना चाहिये, जिससे सदैव उपयोगमें लायी जा सके और अन्य व्यक्तियोंके भी काममें आ सके।

शास्त्रोंका एवं श्रीआचार्य-चरणोंका यह आदेश है कि श्रीव्रजरजका

स्पर्श मात्र उग्रतर पापोंका नाश करके अन्तरात्माको पावन करता है। तदनन्तर श्रीप्रिया-प्रियतमके श्रीचरण-कमलोंमें अनुराग बढ़ाता है, जिस अनुराग-दृढ़तासे परे जीवनका और कोई कर्तव्य शेष नहीं रहता। यदि देहावसान-समयपर इस रजका एक कण मात्र शरीरसे स्पर्श अथवा घटसे प्राप्त हो जाय तो निस्संदेह भगवत्प्राप्ति हो जाती है। यथासम्भव मरणासन्न व्यक्तिको इसका महत्त्व सुना देना परमावश्यक है।

इस रजको किसी श्रीविग्रहपर चढ़ाना ठीक नहीं है, क्योंकि इसमें प्रसादी चन्दन और मनुष्योंकी चरण-रज भी सम्मिलित है।

बोलो श्रीव्रजेश्वरी – व्रजराजकी जय।

विनीत
श्रीव्रजरजकणिकानुरागी
एक सेवक

इस विवरणके अतिरिक्त हस्तलिखित चार विवरण और हैं।

श्रीवृन्दावनके १०८ मन्दिर, श्रीमथुराधामके १०८ मन्दिर, श्रीव्रजमण्डलके १०६ मन्दिर और श्रीव्रजमण्डलकी चौरासी कोसकी यात्रामें पड़नेवाले १०८ मन्दिर, इन सभी मन्दिरोंका प्रसादी चन्दन भी इस रजमें सम्मिश्रित है। इन सभी मन्दिरोंके नामोंकी विस्तृत तालिका अभी अलग रखी है। अति विस्तारके भयसे उसका दिया जा सकना सम्भव नहीं है।

* * * * *

श्रीमद्भागवत सप्ताह-पाठ का परामर्श

प्रसंग सन् १९५२ या ५३ के आस-पासका होना चाहिये। गोरखपुर जिलेके एक ब्राह्मण थे। उन्होंने संस्कृतका अच्छा अध्ययन किया था। बनारसके क्विंस कालेजकी शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। वे संस्कृतमें धारा-प्रवाह बोला करते थे और उन्हें अनेक स्थलोंके सुन्दर-सुन्दर सुभाषित श्लोक कण्ठस्थ थे। संतोंके संसर्गसे उनके मनमें श्रीकृष्ण-भक्ति जाग उठी और भगवत्साक्षात्कारके लिये मनमें चटपटी लगी रहा करती थी। वे बातचीतके बीचमें प्रायः कहा करते थे –

लगा दो प्राण की बाजी अगर गिरधर को पाना है।
नहीं बाजार का सौदा जो पैसे दे के लाना है।।

आप वृन्दावनमें श्रीउड़िया बाबाके आश्रममें रहा करते थे। स्वामी श्रीअखण्डानन्दजी सरस्वतीका आपके प्रति बड़ा सौहार्द था। एक बार बाबूजीके दर्शनार्थ श्रीशास्त्रीजी गीतावाटिका आये हुए थे। उनका परिचय देते हुए स्वामी श्रीअखण्डानन्दजीने कहा था – भाईजी! आप अपने सामने आँसुओंके एक सागरको देख रहे हैं। आप एक छिपे हुए रसिक भक्त हैं। श्रीकृष्णानुरागके सरस पद सुननेपर इतना अधिक अश्रु-प्रवाह होता है कि इनके नेत्रोंसे झरनेवाले आसुओंसे पात्र भर लिया जा सकता है।

स्वामी श्रीअखण्डानन्दजीने श्रीशास्त्रीजीके श्रीकृष्णानुरागी व्यक्तित्वका उल्लेख करते-करते जो परिचय दिया, उससे उनकी आँखें मुँद गयीं और कपोल आसुओंसे भीगने लगे। अन्तरके प्रेमाप्लावित होते ही श्रीशास्त्रीजीका शरीर जैसा रोमाञ्चित और कण्टकित हो जाया करता था, वह भावमयी स्थिति देखते ही बनती थी। उनके रोमकूप कटहलके फल जैसे फूल जाया करते थे। श्रीरामचरितमानसकी एक चौपाई है 'पुलक सरीर पनस फल जैसा'। इस चौपाईके मर्मार्थका एक उदाहरण बन जाया करता था श्रीशास्त्रीजीका भावाभिभूत शरीर।

एक बार श्रीशास्त्रीजीने बाबासे बड़ी आतुरताके साथ प्रश्न किया – भगवान श्रीकृष्णका साक्षात्कार कैसे हो?

बाबाने उल्टा प्रश्न किया – क्या आप वह करेंगे, जो मैं एक स्वजनके नाते परामर्शके रूपमें आपसे कहूँगा?

श्रीशास्त्रीजीने प्रणाम करते हुए श्रद्धापूर्वक कहा – एक बार आप कहकर तो देखिये।

उनके उत्तरसे संतुष्ट होकर बाबाने पुनः पूछा – क्या आप श्रीमद्भागवतमहापुराणका मूल पाठ शुद्ध रीतिसे कर सकते हैं?

श्रीशास्त्रीजीने उसी गहरी श्रद्धा और बड़ी दृढ़ता पूर्वक निवेदन किया – क्या मैं आपके समक्ष भागवतके किसी अध्यायका पाठ करके दिखलाऊँ?

इतना कहते-कहते श्रीशास्त्रीजीने श्रीमद्भागवतके कुछ श्लोकोंका सस्वर पाठ सुना दिया। इससे बाबाको बड़ा संतोष हुआ। योग्य और अधिकारी पात्रको सामने पाकर बाबा बड़े प्यार पूर्वक श्रीशास्त्रीजीसे कहने लगे – मैं अपनी अल्प मतिके अनुसार जो कहूँगा, यदि आपने तदनुसार किया तो मेरी आस्थाके अनुसार अभीष्टकी सिद्धि होनी ही चाहिये। यदि

कोई अन्तराय बाधक तत्त्व बनकर विघ्न उपस्थित करता है तो उसे मात्र किञ्चित् विलम्ब कहा जा सकता है। आप भगवती भागीरथी माँ गंगाके एकान्त तटपर किसी ऐसे शिवालयको खोज लें, जहाँ आसन लगानेपर श्रीशिवलिङ्गका और माँ गंगाकी बहती हुई धाराका सहज दर्शन हो सके। मैं स्पष्ट रूपसे बतानेके लिये पुनः कह रहा हूँ कि श्रीमद्भागवतका पाठ करनेके लिये आप अपना आसन ऐसे स्थानपर लगायें, जो श्रीशिवलिङ्गके एकदम समीप हो, उनका सतत दर्शन होता रहे और भगवान श्रीशिवलिङ्गके दर्शनके साथ-साथ नेत्र ऊपर उठाते ही भगवती गंगाकी पावनी धाराका भी दर्शन होता रहे। यह शिवालय गंगातटके किसी निर्जन स्थानमें हो। उस शिवालयमें शुचि आसनपर बैठकर परम वैष्णवाचार्य कृष्णकथारसिक भगवान शिवको आप श्रीमद्भागवतमहापुराणका सस्वर सप्ताह पाठ बड़ी भक्ति-भावना सहित सुनाइये।

बाबाने जो कहा, उसको बड़े ध्यान पूर्वक श्रीशास्त्रीजीने सुना और साश्रु नेत्रोंसे सभक्ति प्रणाम करते हुए बाबासे विदाई ली। श्रीशास्त्रीजी निकल पड़े ऐसे शिवालयकी खोजमें। खोजनेके क्रमका शुभारम्भ हुआ कानपुरसे। वे गंगाजीके किनारे-किनारे चलने लगे। इस खोजमें कई मास निकल गये। खोजते-खोजते हरिद्वारसे आगे ऋषिकेश नगरकी बस्तीके बाहर एक एकान्त स्थानमें अभिलषित शिवालय भगवती गंगाके तटपर मिल गया और शुभ दिन देखकर आपने भगवान श्रीशंकरके समक्ष श्रीमद्भागवतमहापुराणका सप्ताह पाठ आरम्भ कर दिया। आप मन्द-मन्द स्वरमें बोल-बोल करके पाठ किया करते थे। भावपूर्ण श्लोकोंके आनेपर उन श्लोकोंकी आवृत्ति तो न जाने कितनी बार हुआ करती थी।

श्रीशास्त्रीजी जब बाबाके पाससे विदाई लेकर चले गये, उसके बाद फिर कोई श्रीकृष्ण-दर्शनाभिलाषी भक्त बाबाके पास आया और उसे भी बाबाने यही परामर्श दिया कि आप अपने घरपर रहते हुए श्रीमद्भागवत-महापुराणका भावपूर्वक सप्ताह-पाठ करें। बाबाने श्रीमद्भागवतमहापुराणके सप्ताह-पाठका परामर्श तो दिया, पर इसके साथ ही उनके मनमें खिन्नता भी भर गयी। बाबा मन-ही-मन स्वयं ही स्वयंसे कहने लगे – जब स्वयं पाठ नहीं करते, तब दूसरोंको पाठ करनेके लिये कहना कहाँतक उचित है? आचरण विहीन परामर्शसे अपेक्षित सफलताकी प्राप्ति नहीं होती। ऐसा

परामर्श देना तो एक अनधिकार चेष्टा है। यदि मेरे द्वारा सप्ताह-पारायणका परामर्श दिया गया है तो मुझे भी सप्ताह-पाठ करना चाहिये।

इन विचारोंसे मन आलोड़ित था। बाबाने अपनी कुटियामें ही बैठकर श्रीमद्भागवतमहापुराणका सप्ताह-पाठ आरम्भ कर दिया। बाबाने लगभग दस या ग्यारह सप्ताह-पाठ किये होंगे कि फिर पाठ करना छूट गया, छोड़ नहीं दिया, अपितु छूट गया। बाबाने एक बार कहा था — पाठ करते-करते जब स्थिति ऐसी हो गयी कि ग्रन्थके पृष्ठ-पृष्ठपर भगवान श्रीकृष्ण दिखलायी देने लग गये, इतना ही नहीं पृष्ठपर छपे हुए श्यामाक्षरोंमें श्रीकृष्णके कोमल-श्यामल वपुकी श्यामलता झलमल-झलमल करती हुई परिलक्षित होने लग गयी, तब पाठ कर सकना मेरे लिये बड़ा कठिन हो गया। कठिन ही नहीं, असम्भव-सा हो गया और तभी श्रीमद्भागवतमहापुराणका सप्ताह-पाठ विवशताकी स्थितिमें विसर्जित हो गया। हाँ, इतना अवश्य हुआ कि दस-ग्यारह सप्ताह पाठ करनेमें मुझे श्रीमद्भागवत-पुराणके अधिकांश श्लोक कण्ठस्थ हो गये।

इधर गीतावाटिकामें बाबाके सप्ताह-पाठका क्रम विवशताकी स्थितिमें विसर्जित हो गया और उधर ऋषिकेशके शिवालयमें श्रीशास्त्रीजीके सप्ताह-पाठका अनुष्ठान विवशताकी स्थितिमें अधूरा रह गया। मुझे इस समय याद नहीं आ रहा है कि बाबाने श्रीशास्त्रीजीको कितना पाठ करनेको कहा था। मेरा अनुमान है कि अवश्य ही १०८ पाठका परामर्श दिया गया होगा, पर यह संख्या पूर्ण नहीं हो पायी। मुझे इस समय यह भी याद नहीं आ रहा है कि श्रीशास्त्रीजीने भगवान श्रीशंकरको शिवालयमें बैठकर कितने पाठ सुनाये थे, पर यह तो सत्य ही है कि थोड़े पाठ सुनानेके बाद उनमें ऐसी भावोन्मत्तता परिव्याप्त हो गयी कि वे अपने आसनसे उठकर वृन्दावन चल दिये। फिर श्रीशास्त्रीजी वृन्दावनसे वाराणसी आकर श्रीदुर्गाकुण्डके पास बहुत दिनोंतक एक एकान्त स्थानपर निवास करते रहे। यहाँ भी श्रीकृष्ण-विरहमें उनके नेत्रोंसे आँसू झरते ही रहते थे। अवश्य ही यह उनके जीवनकी एक महत्त्वपूर्ण घटना है कि एक रात भगवती भक्ति देवीने स्वप्नमें प्रकट होकर उन्हें बड़ा आश्वासन प्रदान किया था। श्रीमद्भागवतमहापुराण तो सदैव ही उनके जीवनका आधार ग्रन्थ रहा।

* * * * *

हैजेकी लपेटमें

घटना सम्भवतः सन् १९५४ की है। एक दिन बाबा बाबूजीके घरसे भिक्षा करके रातके समय अपनी कुटियाकी ओर जा रहे थे। द्वारसे बाहर निकलते ही उन्हें जी-मिचलीकी अनुभूति होने लगी। वे रास्तेमें ही वमन करने लगे। कुटियापर पहुँचते-पहुँचते उल्टी बहुत अधिक होने लगी। इसी बीच उन्हें दस्त होने लगा। बाबा चिकित्सा-शास्त्रके पण्डित हैं। अपनी वर्तमान रुग्णताको देखकर उन्होंने बतलाया– हैजा हो गया है।

सब लोग घबड़ाने लगे, पर बाबा तो हँस रहे थे। शारीरिक कष्ट तो बहुत था, किन्तु दवा उनको लेनी नहीं थी। पानीकी कुछ बूँदे मुँहमें डालते ही जी-मिचली होने लगती थी और पेटमें पानी जाये बिना शरीरके भीतर जल-तत्त्वके कम हो जानेकी आशंका थी। बड़ी विकट समस्या उपस्थित हो गयी।

संयोगसे श्रीमोतीलालजी टेकड़ीवाल अपने घरसे गीतावाटिका आ गये। उनका घर शहरमें यहाँसे बहुत दूर घंटाघरके पास था। वे बाबाके भक्त थे और उनके अचानक आगमनको मात्र संयोग कहना चाहिये, अपितु उससे भी सच्ची बात यह होगी कि किसी अचिन्त्यकी प्रबल प्रेरणासे गीतावाटिका आ गये। बाबाको हैजेसे ग्रस्त देखकर और उनके कठोर नियमोंको जानकर एक मध्यम उपाय बतलाते हुए उन्होंने कहा– इस समय तो स्वामीजीको बर्फ देनी चाहिये।

श्रीमोतीलालजी टेकड़ीवालका सुझाव सचमुच समयोचित था, पर बाबा बाजारकी बर्फका उपयोग करते ही नहीं थे। ज्यों ही यह बात श्रीटेकड़ीवालजीको बतलायी गयी, उन्होंने निवेदनपूर्वक कहा कि मेरे घरपर रेफ्रिजरेटर है, मैं गंगाजलसे उस रेफ्रिजरेटरको धुलवा दूँगा और उसमें गंगाजलकी बर्फ तैयार करवा करके दे सकता हूँ। बाबाने इसके लिये अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। श्रीटेकड़ीवालजीने उत्साहपूर्ण तत्परतासे गंगाजलकी बर्फ बनवायी और उसे अपने घरसे ले आये। बाबा गंगाजलकी बर्फको अपने मुखमें रखने लगे। इसीके साथ उनके पेटपर गीली मिट्टीकी और गीले कपड़ेकी पट्टी रखी जा रही थी। भगवानकी कृपासे बर्फ पचने लगी और पेटमें पानीके जानेसे जी-मिचली कम हो गयी। बेचैनीमें पर्याप्त

सुधार हुआ। दो-तीन दिनतक श्रीटेकड़ीवालजीके घरसे बर्फ आती रही और बाबा सेवन करते रहे। क्रमशः बाबाके स्वास्थ्यमें सुधार आने लगा। ठीक हो जानेपर बाबाने बतलाया – मुझसे जुड़े हुए एक व्यक्तिने ऐसा कुत्सित कर्म किया है कि उसका फल हाथों-हाथ भोगना था। जिन्होंने यह कुकर्म किया है, उन्हें इसका ज्ञान भी नहीं हो पायेगा कि उनके कारण मुझे कितना कष्ट भोगना पड़ा है।

* * * * *

प्रयाग का कुम्भ मेला

सन् १९५४ में प्रयागमें कुम्भका विशाल मेला था और उस मेलेमें भगवन्नाम-प्रचारके लिये बाबूजी परिवारके सहित लगभग सवा मास रहे थे। गीताप्रेसकी ओरसे एक शिविर लगा था, जिसमें कथा-कीर्तन-प्रवचनके कार्यक्रम चलते ही रहते थे। बाबूजीके अतिरिक्त स्वामी श्रीशरणानन्दजी, श्रीअखण्डानन्दजी, श्रीपथिकजी, श्रीरामकिंकरजी आदि संतों-विद्वानोंके प्रवचन नित्य होते रहते थे।

कुम्भमें बाबूजीके साथ बाबा थे ही। एक साधु बाबासे एकान्तमें मिले और कहने लगे – आपसे एक निवेदन करने आया हूँ।

बाबाने सम्मानपूर्वक कहा – कहिये, क्या कहना चाहते हैं?

वे साधु कहने लगे – मैं जो कहने जा रहा हूँ, उसपर तो आपको विश्वास करना पड़ेगा। मैं अपनी बातको सिद्ध करनेके लिये प्रमाण दे नहीं पाऊँगा, पर विश्वास करें, मैं सत्य ही कह रहा हूँ। आप तीर्थराज प्रयागमें कुम्भ स्नान करनेके लिये आये हैं, अतः आप पर्व स्नान इतने बजेसे लेकर इतने बजेतकके अन्दर कर लीजियेगा। यह अवधि ऐसी है कि इस बीचमें वे संत, जो सूक्ष्म शरीरसे अन्तरिक्षमें विचरण करते हैं अथवा कहीं अन्यत्र रहते हैं, वे सब संतगण स्नानके लिये आते हैं। इस परम शुभ अवधिमें स्नान करना बड़ा मंगलमय है।

बाबाने उनको प्रणाम किया तथा इस सूचनाके लिये कृतज्ञता व्यक्त की। फिर बाबा और बाबूजीने तथा अन्य स्वजनोंने उस अवधिके मध्य स्नान किया।

* * *

कुम्भ मेलेमें प्रवेश पानेका वृत्त भी बहुत रोचक है। इस वृत्तको बाबाने श्रीमहाराजजीको स्वयं सुनाया था। यह वृत्त इस प्रकार है –

कुम्भके मेलेमें जानेकी बात है। यह बात प्रयागके कुम्भ मेलेकी है। हैजा अथवा महामारी नहीं फैले, इसके लिये मेलाधिकारीकी ओरसे यह आज्ञा रहती है कि मेलेमें वही जा सकता है, जिसने इंजेक्शन लिया हो तथा इंजेक्शन लगा लिये जानेका प्रमाणपत्र हो। यह प्रायः चलता है कि लोग इंजेक्शन नहीं लेते हैं तथा झूठा प्रमाणपत्र देकर मेलेमें चले जाते हैं। बाबाको न तो इंजेक्शन लेना था और न झूठा प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना था और न झूठ बोलना था। इसपर श्रीपोद्दार महाराज बाबापर बड़े बिगड़े – बस, आप तो बात-बातमें टाँग अड़ाते हैं और मुझे परेशान करते हैं। मुझको परेशान करनेके अलावा आपके पास दूसरा काम ही नहीं है।

श्रीपोद्दार महाराजने मेलाधिकारीसे कहा – मेरे साथ एक संन्यासी रहते हैं। वे न तो इंजेक्शन लेंगे और न झूठा प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेंगे। क्या आप उनको मेलेमें प्रवेशके लिये आज्ञापत्र प्रदान कर देंगे?

उन्होंने व्यक्तिगत तौरपर कहा – देखिये, मैं लिखकर तो आज्ञा दूँगा नहीं, पर जब आप कारसे आयेंगे तो मैं आपकी कारको पास कर दूँगा। मेरे खड़े रहनेपर गेटपर कोई आपको रोकेगा नहीं।

उनका उत्तर बड़ा सज्जनतापूर्ण और आत्मीयतापूर्ण था, पर श्रीपोद्दार महाराजको इससे सन्तोष नहीं हुआ। फिर यह तय हुआ कि झूसी, जहाँ ब्रह्मचारी श्रीप्रभुदत्तजी महाराज रहते हैं, उस स्थानके रास्तेसे मेलेमें प्रवेश किया जाये। ज्यों ही उस रास्तेसे प्रवेश करने लगे, त्यों ही गेटपरके व्यक्तिने बाबासे पूछा कि सर्टिफिकेट कहाँ है। बाबाने कहा कि उनके पास नहीं है और न उन्होंने इंजेक्शन लगवाया है। श्रीपोद्दार महाराज बाबासे कुछ कदम आगे थे। जिस प्रकार बाबाके पास प्रमाणपत्र नहीं था, उसी प्रकार बाबाके साथवाले लोगोंके पास भी नहीं था। बाबाका यह उत्तर सुनते ही श्रीपोद्दार महाराज आये और आकर उस गेटकीपरके सामने खड़े हो गये तथा उससे कहा – उनसे क्या पूछते हो, इसके लिये मुझसे पूछो।

इतना कहकर श्रीपोद्दार महाराज कुछ तन करके खड़े हो गये तथा अपनी दृष्टि गेटकीपरकी दृष्टिमें गड़ा दी। गेटकीपर पत्थरकी मूर्तिकी तरह खड़ा रहा, कुछ भी बोला नहीं। बाबाके साथ जितने भी थे, सभी गेटसे

मेलेमें प्रवेश कर गये। बाबाको तो यही लगा कि श्रीपोद्दार महाराजने उस गेटकीपरको हिप्नोटाइज कर दिया था, इसीलिये वह कुछ बोला नहीं। बाबा और अन्य सभी लोगोंके प्रविष्ट हो जानेपर फिर श्रीपोद्दार महाराज भी आ गये।

* * * * *

मूर्च्छित साधु की सँभाल

एक बार बाबूजीके साथ बाबा श्रीअयोध्या धाम गये थे। वहाँपर कोई आत्मीय व्यक्ति श्रीरामार्चन अनुष्ठान करवा रहा था और उसमें बाबूजी आमन्त्रित थे। अयोध्यामें बाबूजी एवं बाबाको जहाँ ठहराया गया था, उस स्थानसे कुछ हटकर एक साधु सड़क पर मूर्च्छित पड़ा था। उसकी बाह्य दशा देखकर यही अनुमान होता था कि वह साधु मरणासन्न है।

अपने विश्राम स्थानसे बाबाने देखा कि सड़कपर उस मूर्च्छित साधुके बगलसे न जाने कितने लोग और महात्मा निकल गये, पर किसीने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। बाबाका कोमल हृदय इस उपेक्षा वृत्तिको सहन नहीं कर सका और वे स्वयं जाकर उसके पास बैठ गये। वे दोपहरसे शामतक उसके पास बैठे रहे और उसके शरीरकी मक्खियाँ उड़ाते रहे। उन दिनों बाबाका यह नियम था कि मध्य रात्रिसे पहले-पहले अर्थात् बारह बजेसे पहले ही भिक्षा हो जानी चाहिये। शामके समय किसीने बाबासे कहा – आप चलकर शौच-स्नानादिसे निवृत्त हो लें फिर आप भिक्षा ग्रहण करें।

बाबाने कहा – इन मूर्च्छित साधुको छोड़कर मैं कैसे जाऊँ? मुझे भय है कि रात्रिके एकान्तमें कुत्ते या सियार इनको नोच लेंगे।

बाबाकी बात सुनकर उनको समझाते हुए कई लोगोंने कहा – कुत्ता या सियार जीवित व्यक्तिको नहीं नोचते। वे तो मुर्दाको ही नोचते हैं।

लोगोंके द्वारा बार-बार समझाये जानेपर बाबाने विश्वास कर लिया और वे अपने वास स्थानपर चले आये। दूसरे दिन सबेरे जब बाबा गये तो उन्होंने देखा कि कुत्ते और सियार उन मूर्च्छित साधुको लगभग पन्द्रह गज घसीटकर ले गये हैं, सियारने पैरका अँगूठा खा लिया है तथा शरीरके

कई भागपर पंजे द्वारा नोच लिये जानेके निशान हैं। बाबाको मन-ही-मन बड़ा कष्ट हुआ। उन्हें हार्दिक खेद था कि लोगोंकी बातोंपर विश्वास करके उन साधुके पाससे मैं क्यों हट गया। बाबा फिर वहीं बैठ गये।

दोपहरके बारह बजे श्रीरामार्चन अनुष्ठानकी सम्पन्नता होनेवाली थी, अतः बाबाको उसमें उपस्थित होनेके लिये बार-बार बुलाया जा रहा था। वे बड़े धर्म संकटमें थे कि क्या करूँ और क्या न करूँ? अयोध्या उनके लिये नवीन स्थान था। वे अनुष्ठानकी सम्पन्नताके अवसरपर जाना चाहते थे किन्तु प्रश्न यह था कि इन मूर्च्छित साधुको किसे सँभलायें। इतना ही नहीं, अनुष्ठानकी सम्पन्नता होते ही दोपहरको लगभग दो बजे बाबूजीके साथ गोरखपुर वापस चला जाना भी था। मनमें बड़ी उलझन थी। ठीक इसी समय प्रभुकी ओरसे सहायता मिली। एक बंगाली साधु उधरसे आ निकले। वे बाबाके पूर्व परिचित थे और अयोध्यामें उनका बड़ा सम्मान और बड़ा प्रभाव था। बाबाको वहाँ सड़कपर बैठा हुआ देखकर उन्होंने पूछा – बाबा! आप यहाँ कैसे बैठे हैं?

बाबाने उन मूर्च्छित साधुके बारेमें सब बात बतला दी और कहा – इन्हें किनको सँभलाकर अनुष्ठानमें जाऊँ?

उन बंगाली साधुने कहा – बाबा! इस साधुको मैं जानता हूँ। यह संग्रहणीका रोगी है। खान-पानके असंयमके फलस्वरूप यह साधु इस रोगसे भीषण रूपसे ग्रस्त है। यह मेरे अस्पतालमें भर्ती हो चुका है। मैंने यहाँ एक अस्पताल खोल रखा है। खोलनेका उद्देश्य है असमर्थ साधुओंकी सेवा।

उनकी बात सुनकर बाबाने उनसे कहा – मेरी आपसे एक प्रार्थना है। अब ये मरणासन्न दशामें हैं। जबतक इनका श्वास चल रहा है, तब तकके लिये आप इन्हें अपने अस्पतालमें भर्ती कर लें।

उन बंगाली साधुने कहा – आप निश्चिन्त हो जाइये। मैं सारी व्यवस्था कर दूँगा। अस्पतालसे स्ट्रेचर आ जायेगा और अस्पतालमें स्थान मिल जायेगा।

बाबाने संतोषकी साँस ली और प्रभुको साधुवाद दिया। फिर वे जल्दीसे स्नान करके श्रीरामार्चन अनुष्ठानमें गये। अनुष्ठानका अन्तिम अंश चल रहा था और उसकी फलश्रुति कही जा रही थी कि इस अनुष्ठानसे सबकी मनोकामना पूर्ण होती है। फलश्रुति सुनते-सुनते बाबाने

मन-ही-मन भगवान श्रीसीतारामजीसे कहा – वे मूर्च्छित साधु बहुत कष्ट पा रहे हैं। उनकी मृत्यु हो जाय तो उनको कष्टसे त्राण मिले।

बाबाको बादमें यह सूचना मिली कि उन बंगाली साधुको सँभला करके वे वहाँसे हटे, इसके पन्द्रह-बीस मिनटके अन्दर ही उन साधुका देहान्त हो गया। इस सूचनासे बाबाको बड़ा संतोष मिला। उसी समय उन्होंने बाबूजीसे कहा – आप मुझे अढ़ाई सौ रुपये दे दीजिये।

बाबूजीने पूछा – क्या करेंगे?

बाबाने कहा – मुझे चाहिये। आप दे दीजिये।

बाबाने वे रुपये वहीं आश्रममें दे दिये, जिससे उन दिवंगत साधुके पारमार्थिक कल्याणके लिये एक रामार्चन अनुष्ठान हो सके। बाबा बतला रहे थे – प्रभु बड़े कृपालु हैं। मुझे दोपहरके दो बजे श्रीपोद्दार महाराजके साथ गोरखपुर लौटना था। लौटनेसे पहले ही प्रभुने सारा काम उचित रीतिसे पूर्ण करवा दिया। उन मूर्च्छित साधुके पास मैं बैठा, मेरे बैठनेकी लाज प्रभुने रख ली। प्रभुके चरणोंमें बार-बार वन्दन!

* * * * *

श्रीबच्चनजीकी लेखनीके शब्द-पराग

श्रीहरिवंशरायजी 'बच्चन' अपनी मधुमयी रचनाके लिये सर्वत्र विख्यात हैं। उनकी 'मधुशाला' तो मधुरतासे लबालब भरी हुई एक ऐसी प्याली है, जो हर छन्दकी पंक्ति-पंक्तिपर क्षणे-क्षणे छलकती रहती है। उनकी रचनामें जन-मनको स्पर्श कर लेनेकी अद्‌भुत क्षमता है। इन रचनाओंमें कोमल भावनाओंकी कलिताभिव्यक्ति इतनी सरस हुई है कि कोई भी सहृदय श्रोता अथवा पाठक भावविभोर होकर खुले स्वरसे सराहना करने लगता है। उनकी 'मधुशाला'को वस्तुतः सीमातीत सराहना मिली है, पर समयके प्रवाहमें एक दिन ऐसा भी क्षण आया, जब मधुशालायी रंगोल्लासद मादकताने यह निश्चय कर लिया कि अब अध्यात्मवादके प्रतिपाद्य द्वन्द्वातीत ब्रह्मानन्दकी गुण-गरिमाका बखान करना है। मधुशालाकी रंगीली मादकताका आध्यात्मिकताके द्वारकी अर्चनामें प्रवृत्त होना एक ऐसा तथ्य था, जिसने सबको चौंका दिया। यह परिवर्तन था ही चकित बना देनेवाला और इस विस्मयकारी परिवर्तनका उद्‌भव हुआ पूज्य बाबाकी संनिधिमें। पूज्य बाबाके

सांनिध्यका यह एक चमत्कारी प्रभाव था। सांनिध्यका यह पुनीत अवसर कैसे मिला और आध्यात्मिकताके गायनमें सहज प्रवृत्ति कैसे हुई, इसकी भी गाथा रोचक है। पूज्य बाबाके सम्पर्कमें आनेके बाद श्रीमद्भगवद्गीताके पद्यानुवाद करनेके प्रेरणोद्भवसे सम्बन्धित सारा विवरण स्वयं श्रीबच्चनजीने अपनी कृतियोंकी भूमिकामें लिखा है। उनकी आध्यात्मिक रचना है 'जन गीता' और 'नागर गीता।' इन दोनों कृतियोंकी भूमिकाके आवश्यक अंश ज्यों-के-त्यों नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं। 'जन-गीता'के 'समर्पण' की प्रक्रियाने तो अनेक गुरुजनों-विद्वानोंको अत्यधिक आश्चर्यमें डाल दिया है। यह 'समर्पण' बाबाके चरणोंपर न होकर उनके अनन्य परिकर श्रीरामसनेहीजीके प्रति है। वह 'समर्पण' भी नीचे दिया जा रहा है। अब श्रीबच्चनजीकी लेखनीसे विगलित-वितरित शब्द-परागका सौरभ देखिये –

(क) 'जन गीता'में समर्पण–

समर्पण

श्रीस्वामीजी महाराजकी
काष्ठ-मौनावस्थामें उनकी सेवामें रहनेवाले
श्रीरामसनेही
तथा
उन सब लोगोंको
जिन्होंने कभी, किसी प्रकार भी, उनकी सेवा की है।

— — — — —

(ख) 'जन गीता'में पहले संस्करणकी भूमिका–

मंगलाचरण

मेरे जीवनमें एक विचित्र घटना घटी। जो आगे आया, उसके लिये न मैंने कभी प्रयत्न किया था, न उसकी प्रत्याशायें की थी और न उसके लिये तैयार ही था, पर कोई अज्ञात शक्ति, शायद बहुत दिनोंसे, मुझे उसकी ओर ले जा रही थी।

'है एक कहीं मंजिल जो मुझे बुलाती है।'

(मिलन यामिनी)

एकाएक मुझे कई कड़ियाँ याद हो आयी हैं, जिनके द्वारा मेरा परिचय कलकत्ताके रामनिवाससे हुआ और रामनिवासने मेरा परिचय ब्रह्मस्वरूप श्रीस्वामीजी महाराजसे कराया। मैं उनके विचारोंकी सूक्ष्मता, भावोंकी गम्भीरता, व्यवहारकी आत्मीयता और उनके तपोमय जीवनकी पवित्रतासे अभिभूत हो गया।

उन्होंने 'बच्चन दादा' कहकर मेरा स्वागत किया। मैं अभी मन-ही-मन आश्चर्य कर रहा था कि इस पूर्व अपरिचितके पास आते ही क्यों मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी अपनेके पास आ गया हूँ कि उन्होंने कहा – हम किसी पूर्व जन्मके संस्कारसे मिले हैं।

मैं अपने सहज अविश्वासी स्वभावसे पूछ बैठा – क्या पुनर्जन्म होता है?

उन्होंने दृढ़ विश्वाससे कहा – होता है।

और वे कुछ सोचने-से लगे, कुछ कहते भी रहे, पर मुझे लगा कि जैसे मैं क्षणभरको चेतना-शून्य हो गया और इतनेमें ही कई जन्मोंके आवर्तमें घूम आया। वे कह रहे थे – इसमें आश्चर्य करनेकी क्या बात है, जन्म तो इसी जन्ममें कई बार होता है।

मेरे साथ मेरी पत्नी भी उनसे मिली। उनसे बात करते हुए उन्होंने कहा – तुम्हें मैं अपनी बहन बनाऊँगा।

और फिर मेरी ओर देखकर बोले – पर तुम्हें बहनोई नहीं बनाऊँगा।

मैंने उन्हें अपनी कुछ रचनाएँ भी सुनाई और जिस तन्मयतासे उन्होंने मेरी कविताएँ सुनीं, उस तन्मयतासे शायद आजतक किसीने मेरी कविताएँ नहीं सुनीं। 'मधुशाला' सुनकर उन्होंने कहा – मैं तुम्हारे 'प्याला'को 'काला' करूँगा; तुम्हारी मधुकी 'धारा'को उलट दूँगा, तुम्हारी मधुशालामें रम जाऊँगा।

अंतमें कुछ सोचकर बोले – तुम जो लिखते हो, उसका अर्थ तुम नहीं जानते।

दूसरे दिन मैंने अपने दो कवि-बन्धुओंके साथ उनके दर्शन किये। जिसने जो भी प्रश्न किया, उसका उन्होंने सारगर्भित उत्तर दिया। विशेषकर उन्होंने यह बताया कि काष्ठ मौन क्या है। वे थोड़े दिनों बाद काष्ठ मौन लनेवाले थे। बादको एकने मुझसे कहा कि स्वामीजीकी चेतना सजग हो गयी थी कि उसे सँभालना उनके लिये कठिन हो रहा था, बस, उन्होंने अपने

आत्म-बलसे उसे तिनकेकी तरह त्याग दिया।

दो दिनमें ही उन्होंने हमें ऐसी आत्मीयतामें बाँध लिया था कि उनके आगामी काष्ठ मौनकी कल्पना हमें विचलित करने लगी। कैसा लगेगा, जब वे न किसीसे बोलेंगे, न किसीकी ओर देखेंगे, न किसीको पहचानेंगे। हमारी व्यग्रताका समाधान उन्होंने यों किया – तब हम और ऊँचे स्तरपर मिलेंगे।

दूसरी बार जब मैंने उनके दर्शन किये तो उन्होंने मुझे कुछ अध्यात्मकी बातें बतायीं। मैंने कहा – महाराज, मैं तो आपके चरणोंसे आगे कुछ भी नहीं देख पाता।

तुरंत बोले – तो यदि मेरे चरणोंमें कुछ होगा, तो वे तुम्हें आगे भी ले जायेंगे।

उन्होंने मेरी शक्तिको नहीं, अपने चरणोंको चुनौती दी। यह भी महानताके अनुरूप था। यह उनके अंतिम शब्द थे, जो मेरे कानोंमें पड़े। इसके कुछ ही दिनों बाद उन्होंने काष्ठ मौन ले लिया।

काष्ठ मौनके पश्चात् जब मैंने उनके दर्शन किये तो मनमें बड़ा क्षोभ हुआ, बड़ी निराशा हुई। जिस ऊँचे स्तरका आश्वासन उन्होंने दिया था, उसका कोई आभास मुझे नहीं मिला।

कुछ समय बीत गया। एक ब्राह्म मुहूर्तमें अध-सोया, अध-जागा-सा पड़ा हूँ। देखता हूँ – स्वामीजी महाराज सामने खड़े हैं, चेहरेपर वही पहलेकी-सी आत्मीयता भरी मुसकान है। कह रहे हैं – ''बच्चन दादा!''

मैं प्रसन्न हूँ।

फिर –''बच्चन दा.....दा!''

मैं और प्रसन्न हूँ।

फिर –''बच्चन दऽ –दऽ'' –''बच्चन दो –दो!''

मैं स्तब्ध हूँ, यह अभिप्राय था आपका?

''मेरा कोई दादा-दीदी नहीं है। मैं महा मँगता हूँ। मुझे दो –दो!''

''महाराज, आपको देने योग्य मेरे पास क्या है?''

''बहुत है, योग्य भी है; अयोग्य भी है; मुझे सब दो; मुझे अपनी प्रीति दो, प्रतीति दो, श्रद्धा दो; अपना रोग, शोक, विकार, अपनी चिंता दो; अपना अहं दो, अपनेको दो। विषमता देखो, तुम देते हो, पर मेरे पास कुछ नहीं आता। मैं माँगता ही जाता हूँ। तुम्हारी पंक्ति उलट देता हूँ,

'भेंट न जिसमें मैं कुछ पाऊँ पर तुम सब कुछ खोओ।'

(सतरंगिनी)

यही अमर दान है। मनुष्य न खाली हाथ आता है, न खाली हाथ जाता है; उसे हाथ झाड़कर जाना चाहिये। मनुष्यके पास ऐसा कुछ भी नहीं, जिसे देकर वह कुछ हलका न हो सके, कुछ मुक्त न हो सके। जो भी दे सको, दो। जो नहीं देता, उसका भार नहीं टलता, उसका बन्धन नहीं कटता।''

''देना कोई सरल काम तो नहीं।''

''बच्चन दऽ – बचनेका बचन दो। मैंने कहा था, तुम्हें बहनोई नहीं बनाऊँगा। तुम हँस पड़े थे। मेरा अभिप्राय नहीं समझे थे। कबीरका कथन भूल गये? मैं बहनोई, राम मोरा सारा-सहारा। मैंने बचन दिया था, तुम भी बचन दो। बचना, बचनेवाले और बचानेवाले दोनोंके सहयोगसे संभव होता है।''

''प्रयत्न करूँगा।''

''बचन दऽ'' – ''बचानेवाला बचन दो!''

''मैं तो जग-जीवनमें डूबा हूँ, बचानेवाला बचन मैं कहाँसे दूँगा।''

''तुम जो लिखते हो, उसका अर्थ तुम नहीं जानते। यह मैंने तुम्हारा स्वभाव कहा है। यानी तुम उपकरण हो – शंख हो, वीणा हो; फूँकनेवाला, बजानेवाला दूसरा है। जो तुम स्वभावसे हो, उसके लिये सचेत रहो। तुम उपकरण मात्र बनो, बचानेवाला बचन तुमसे प्रतिध्वनित होगा।''

मेरी आँखें खुल गईं। कुछ दिन मैंने यह सोचनेका प्रयत्न किया कि वह बचानेवाला बचन क्या होगा। फिर जैसे किसीने मनमें कहा – ऐसा करके तुम पूर्ण उपकरण बननेमें बाधा डाल रहे हो।

कई महीने बीत गए। एक दिन सहसा दस बरस पहले एक मित्रकी कही हुई एक बात कानोंमें रह-रहकर गूँजने लगी। गजानन्दने मुझसे कहा था – बच्चन, गीताको लोकप्रिय वाणीमें कहो।

और मैंने फौरन यह कहकर टाल दिया था – यह मेरे बसकी बात नहीं है।

पर अब बात तो उनकी थी, पर स्वर स्वामीजी महाराजका था। मैं सोचने लगा, क्या बचानेवाला बचन यही नहीं है? यही है, तो मेरे लिये

यह काम कितना कठिन है!

'खो गई नदियाँ जहाँ, तू खोजने आई किनारा।'

(आरती और अंगारे)

इस कामको उठाना मेरे लिये असंभव है, पर इस पुकारकी उपेक्षा करना भी तो मेरे लिये असंभव है। इस संघर्षमें अनेक चमत्कारी अनुभव हुए, जिनसे प्रेरित होकर मैंने यह गीता-यज्ञ आरंभ किया और वह जिस रूपमें संपन्न हुआ है, मुझे लगता है, वह किसी अज्ञात शक्तिसे निर्दिष्ट है। मैंने केवल उपकरण बने रहनेका प्रयत्न किया है।

इस यज्ञका सबसे अधिक भार तेजीजीको वहन करना पड़ा।

'जिस जगह यज्ञ होता, राक्षस आ ही जाते।'

(बुद्ध और नाचघर)

यज्ञ वह नहीं है, जिसमें आग और आहुति हो; राक्षस वही नहीं, जिसके सिरपर सींग और जबड़ेमें बड़े-बड़े दाँत हों। मुझे गीता-यज्ञमें लगा, देख, राक्षस एक तुरंत रोगके रूपमें आया और उसने मेरी पत्नीपर आक्रमण किया, पर प्रभुकी कृपासे मैं उद्विग्न नहीं हुआ। स्वामीजी महाराजने कहा था, ''अपनी चिंता मुझे दो।'' मैंने अपनी चिंता उन्हें दे दी और यज्ञमें लगा रहा। मेरा विश्वास है कि उन्होंने ही मेरी चिंताका शमन किया, राक्षसको परास्त किया। अब मेरी पत्नी स्वस्थ हैं और यज्ञ भी संपूर्ण हो गया है।

स्वामीजी महाराजने कहा था, ''मेरे चरणोंमें कुछ होंगे, तो वे तुम्हें आगे भी ले जायेंगे।'' गीताको 'जन-गीता' का रूप देते हुए प्रतिक्षण मुझे अनुभव हुआ है कि उन्हींके चरण मेरे चरणोंको खींच रहे हैं।

'खींचतीं तुम कौन ऐसे बंधनोंसे जो कि रुक सकता नहीं मैं।'

(मिलन यामिनी)

गीताके अधिकारियोंसे मेरी प्रार्थना है कि वे 'जन गीता' की पंक्तियोंको स्वामीजी महाराजकी चरण-रेख समझकर स्वीकार करें। ये पंक्तियाँ जहाँ कहीं वक्र, कुंचित, अस्पष्ट अथवा खण्डित जान पड़ें, वहाँ यही समझा जाये कि मेरे दुर्बल चरण उनके दृढ़ चरणोंका ठीक अनुसरण नहीं कर सके हैं।

प्रभुकी प्रेरणा, बुद्धिकी विमलता एवं हृदयकी सद्भावनासे जो

सज्जन मेरी त्रुटियोंकी ओर संकेत करेंगे, उनपर मैं कृतज्ञता एवं विनम्रतापूर्वक विचार करूँगा।

अपनी अनुभूतियोंकी जो चर्चा मैंने यहाँ की है, वह स्वामीजी महाराजकी प्रेरणा है, कि मौनावस्थाका उच्चस्तरीय मिलन, कि मेरे अतिचेतनकी एक झलक, कि मेरे अवचेतनकी कोई झाँकी, कि मेरी कवि-कल्पना मात्र, इसे कौन बताये?

स्वामीजी महाराज बता सकते हैं, पर वे मौन हैं; मैं मुखर हूँ, पर मैं बता नहीं सकता।

'मेरी तो हर साँस मुखर है,
प्रिय, तेरे सब मौन सँदेश।'

(प्रणय पत्रिका)

'जन गीता' रचते हुए मैंने एक विशेष सुखका अनुभव किया है। मेरी हार्दिक कामना है कि जो इसे पढ़े, सुनें, सुनाएँ उन्हें भी वही सुख प्राप्त हो।

२१९ डी –१, डिप्लोमेटिक एनक्लेब, बच्चन
नई दिल्ली
१२ - ५ - ५८

* * * * *

तुलसी पूजन

बाबा पहले श्रीतुलसीजीकी नित्य अर्चना किया करते थे। तीर्थयात्रा ट्रेन सन् १९५६ के जनवरी मासमें चली थी। तीर्थयात्रा ट्रेनके चलनेतक तुलसी पूजनका क्रम अखण्ड रूपसे निभता रहा। बाबा श्रीतुलसीजीके बिरवेमें जल दिया करते थे और जल देनेके बाद तुलसीजीके पत्तोंका स्पर्श करते हुए कुछ देरतक खड़े रहा करते थे। खड़े-खड़े वे क्या करते थे, यह तो वे ही जानें, परन्तु इतना अनुमान अवश्य किया जा सकता है कि वे स्तवन-निवेदन-गुणगायन करते होंगे। इस नियमके प्रति बाबा बड़े कड़े थे। यदि कभी उनको बाबूजीके साथ यात्रा करनी पड़ती थी तो यात्रामें भी

किसी भक्तके घरसे श्रीतुलसीजीका गमला रेलवे प्लेटफार्मपर मँगवाया जाता था और वहाँ बाबा अपनी तुलसी-अर्चना सम्पन्न किया करते थे।

* * * * *

तीर्थों की पावन यात्रा

भारतके प्रमुख तीर्थस्थलोंका परिचय समाजको देनेके लिये यह निश्चय किया गया कि सन् १९५७ के जनवरी मासमें 'कल्याण' पत्रिकाका 'तीर्थ' विशेषांक प्रकाशित किया जाय। स्थान-स्थानके संतोंको, महन्तोंको, विद्वानोंको, विशेषज्ञोंको, मठ-मन्दिरके प्रबन्धकों आदि-आदिको तीर्थ-स्थानोंका विवरण भेजनेके लिये अनुरोध किया जाने लगा। इसीके साथ ट्रेन द्वारा तीर्थयात्रा करनेका भी निर्णय ले लिया गया। यह निर्णय लिया गया मुख्यतः श्रीसेठजी (पूज्य श्रीजयदयालजी गोयन्दका) की प्रेरणासे ही। तीर्थ-यात्रा करनेसे तीर्थोंकके लिये उत्तम सामग्री तो एकत्रित होती ही, परंतु इससे भी महत्त्वपूर्ण तथ्य यह था कि इस यात्रासे धर्म-ग्रन्थों एवं धर्माचार्यों द्वारा हिन्दू मात्रके लिये निर्दिष्ट कर्तव्यके पालनके आदर्शकी स्थापना होती। शास्त्रोंमें तो तीर्थ-यात्रा करनेके लिये लिखा ही गया है, भारतके चार सुदूर कोनोंमें चार प्रधान मन्दिरोंके पास चार मुख्य मठोंकी स्थापना करके भगवान श्रीआदिशंकराचार्यजीने निर्देश दिया कि भारतके तीर्थोंकी यात्रा करना हर एक हिन्दूका धार्मिक कर्तव्य है। महान आचार्यों द्वारा यह कर्तव्य-निर्देश भी इसीलिये है कि जन-जनका जीवन धर्म-पथपर अग्रसर होता रहे।

तीर्थ-यात्राका निश्चय होते ही सन् १९५६ के जनवरी मासमें ट्रेन द्वारा तीर्थ-यात्रा करनेकी योजना बना ली गयी। ज्यों ही लोगोंको ज्ञात हुआ कि बाबूजी और बाबाने तीर्थ-यात्राका निश्चय कर लिया है और तीर्थ-यात्रा-ट्रेन वाराणसीसे प्रस्थान करनेवाली है, जगह-जगहके लोग साथ चलनेके लिये उत्सुक हो उठे। मना करते-करते भी ट्रेनमें साथ चलनेवाले लोगोंकी संख्या छः सौसे भी अधिक हो गयी।

तीर्थ-यात्राके लिये जो तिथि निर्धारित की गयी थी, उसके अनुसार बाबूजी और बाबा वाराणसी पहुँच गये। अन्य तीर्थ यात्री भी आ गये, परंतु एक विकट परिस्थिति सामने खड़ी हो गयी। तीर्थ-यात्राके कार्यक्रमके

अनुसार तीर्थ-यात्रा-ट्रेन वाराणसीसे चलकर कलकत्ता-जगन्नाथपुरी-मद्रास-रामेश्वरम्-द्वारका होते हुए सभी तीर्थ स्थानोंपर जाने ही वाली थी कि तभी उड़ीसामें दंगा-फसाद हो जानेके कारण सरकारने यात्राको रोक दिया। इस विकट परिस्थितिमें बहुत विचारके बाद तीर्थयात्राका नवीन कार्यक्रम बनाना पड़ा। अब यह निश्चित किया गया कि तीर्थ-यात्रा-ट्रेन द्वारका-रामेश्वरम्-मद्रास होते हुए चले। यह सही है कि इस नवीन कार्यक्रमके अनुसार भारतकी परिक्रमा उल्टी होगी, पर ऐसा विवश होकर करना पड़ा। नवीन कार्यक्रमके अनुसार रेलवे अधिकारियोंसे यात्राके लिये आज्ञा मिलते ही २७ जनवरी १९५६ के दिन तीर्थ-यात्रा-ट्रेनने वाराणसीसे प्रस्थान किया। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रस्थानके पूर्व काशीके विद्वान पण्डितोंके द्वारा भगवान श्रीगणपति एवं अन्य देवताओंका वेद मन्त्रों द्वारा विधि पूर्वक पूजन करवाया गया और भगवन्नामके संकीर्तन एवं जयघोषके उपरान्त ही ट्रेन वाराणसी स्टेशनसे चली। सम्पूर्ण यात्राके विस्तृत वर्णनका दिया जाना तो सम्भव है ही नहीं, अतः कुछ एक स्थानोंका ही सांकेतिक विवरण दिया जा रहा है।

१ – चित्रकूट

वाराणसीसे चलकर प्रातःकाल ट्रेन करवी स्टेशनपर पहुँची। वहाँ प्रातःकालीन प्रार्थना एवं संकीर्तनके कार्यक्रम पूज्य श्रीगोस्वामीजीके नेतृत्वमें हुए। बाबूजीने सभी यात्रियोंको यात्रामें पालनीय आवश्यक नियम सुनाये। सम्पूर्ण यात्रामें यह क्रम रहा कि प्रातःकाल जिस स्टेशनपर गाड़ी पहुँचती, वहीं प्लेटफार्मपर सब यात्री एकत्रित होकर श्रीगोस्वामीजीके नेतृत्वमें प्रार्थना एवं संकीर्तन करते। उसी समय आस-पासके दर्शनीय स्थानोंकी जानकारी यात्रियोंको दे दी जाती। करवीसे बस द्वारा सब लोग चित्रकूट गये। वहाँ दो दिनका वास रहा। श्रीकामदगिरिकी सभीने परिक्रमा लगायी। चित्रकूटके वातावरणकी शान्ति एवं वनकी शोभासे बाबा बड़े प्रभावित हुए। उस शान्ति और शोभाको देखकर बाबाको एक बड़ा दिव्य अनुभव हुआ।

मन्द-मन्द प्रवाहिनी मन्दाकिनीजीके तटपर बाबा बाँयी करवट लेटे हुए थे, उन्हें तन्द्रा भी नहीं थी। शरीरसे तो बाबा मन्दाकिनी तटपर लेटे हुए थे, परंतु उनका अनुभूति-जगत कुछ अन्य ही था। वे अनुभव करने लग गये कि मैं एक बड़े सुन्दर एवं सुरम्य वनमें विचरण कर

रहा हूँ। वनकी शोभा अवर्णनीय है। वृक्ष छोटे-छोटे ही हैं। वृक्षोंपर पके-पके मधुर फल लटक रहे हैं। फलोंके भारसे वृक्षोंकी शाखाएँ झुक गयी हैं। उन फलोंकी सुन्दरता और कान्ति अनोखी है। सम्पूर्ण वनकी शोभा आश्चर्यमयी है। बाबाके मनमें यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि मैं कहाँ हूँ, यह कौन-सा स्थान है और इस वनका नाम क्या है? उस नितान्त निर्जन वनमें भला कौन इन जिज्ञासाओंका समाधान करे? चारों ओर थी घोर सघनता और महा निर्जनता। जो भी हो, वनकी शोभा मनको बड़ी प्यारी लग रही थी। वनमें विहरण करते एक सुन्दर बालक दिखलायी दिया। वह श्याम वर्णका था। उस बालकका सौन्दर्य और लावण्य भी अनोखा था। उस श्याम बालकसे बाबाने पूछा – यह कौन-सा वन है?

बालकने कहा – चित्रकूट।

चित्रकूट नाम सुनकर बाबा 'चित्रकूट' 'चित्रकूट' 'चित्रकूट' नामकी आवृत्ति करने लगे। वह बालक तो वनमें अदृश्य हो गया, परंतु बाबा चित्रकूट नामकी आवृत्ति करते ही रहे। आवृत्ति करते हुए बाबा वनमें विचरण करने लगे। बाबा सोचने लगे कि जब त्रेतायुगमें भगवान श्रीरामने भगवती सीता एवं भाई लक्ष्मणके साथ चित्रकूटमें निवास किया होगा, तब यह चित्रकूट और इसके आस-पासका सारा वन-प्रान्त बहुत-बहुत सुन्दर रहा होगा।

बाबा इस प्रकारसे चिन्तनमें निमग्न थे, तभी यह दिव्यानुभूति तिरोहित हो गयी। बाबाने देखा कि मैं विहरण नहीं कर रहा हूँ, अपितु मन्दाकिनीके तटपर लेटा हुआ हूँ। चित्रकूटकी उस परम पवित्र भूमिने बाबाको अपनी जिस दिव्य छविका दर्शन करवाया, उससे बाबाका मन भक्ति-भावसे उर्मिल हो उठा।

बाबाने न जाने कितनी बार इस दिव्यानुभवको सुनाया है।

२ – दिल्ली

अयोध्यासे नैमिषारण्य, हरिद्वार, कुरुक्षेत्र होते हुए तीर्थ-यात्रा-ट्रेन दिल्ली पहुँची। दिल्लीमें बाबा कारमें बैठे हुए एक बार जब जामा मस्जिदके पाससे निकले, उस समय बाबाको कुछ विचित्र-सा अनुभव होने लगा। आध्यात्मिक स्तरकी भावमयी तरंगोंके स्पर्शकी अनुभूति

बाबाको होने लगी। बाबाको ऐसा लगा मानो वातावरणमें दिव्य प्रेमकी लहरें छायी हुई हैं। बाबाने मन-ही-मन सोचा कि कहीं आस-पास अवश्य ही किसी सिद्ध संतकी उपस्थिति है। यदि वह संत वर्तमानमें नहीं है तो भूतकालमें रहा ही होगा और उसीके कारण यहाँका वातावरण आध्यात्मिक भाव-तरंगों (SPIRITUAL VIBRATION) से इतना अधिक भरपूर और इतना अधिक सशक्त है। बाबाने यह बात पासमें बैठे हुए पं.श्रीजीवनशंकरजी याज्ञिकको बतलायी।

श्रीयाज्ञिकजी काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमें अँगरेजीके प्राध्यापक थे। परम पूज्य श्रीमालवीयजीको प्रायः श्रीमद्भागवतकी कथा सुनाया करते थे। ज्यों ही बाबाने अपने विचित्र अनुभवकी बात श्रीयाज्ञिकजीको बतलायी, उन्होंने तुरन्त कहा – यहाँ जामा मस्जिदके द्वारपर सिद्ध संत सरमदकी मजार है। श्रीसरमद ईरानसे भारत सौदागरके रूपमें आये थे। भारत आकर वे बन गये फकीर और फकीरसे बन गये अवधके कुमार भगवान श्रीरामके सच्चे भक्त। वे सदा अवधूतके रूपमें रहते थे। उन्हें भगवान श्रीरामका दीदार (दर्शन) हो चुका था। भगवानकी रूप-माधुरीपर संत सरमद जी-जानसे फिदा थे। भगवान श्रीरामके ख्यालमें वे इतना गर्क रहते थे कि उन्हें दीन-दुनिया-दौलतसे कोई मतलब नहीं रह गया था। औरंगजेबके बड़े भाई दाराशिकोह इन्हें ही अपना पीर मानते थे। मुल्ला-मौलवियोंको इस बातसे बड़ी चिढ़ थी कि एक मुसलमान फकीर हिन्दुओंके देवी-देवताओंकी पूजा करता है। उन्होंने बादशाह औरंगजेबको भड़काया। धर्मान्ध औरंगजेबका मजहबी जुनून संत सरमदकी इस दीवानगीको गवारा नहीं कर सका और कुफ्रके नामपर उसने सिद्ध संत सरमदको मौतकी सजा दे दी। इस हुक्मनामेकी खिलाफत कौन करता? यही औरंगजेब अपने बड़े भाई दाराशिकोहके दो टुकड़े करवा चुका था। एक मोहतरम फकीरके लिये सजा-ए-मौतकी नापाक बातसे लोगोंके दिल तड़प उठे। यह दर्दभरी बात बरदाश्तके बाहर थी। लोगोंकी निगाहें नफरतसे भर गयीं। औरंगजेबके दिलमें खौफ था कि कहीं बगावत न हो जाय, इसलिये चौराहोंपर और जगह-जगहपर सेना तैनात कर दी गयी। काफी इन्तजामके बाद भी हमेशाके लिये जुदा होनेवाले शाह सरमदके कदमोंमें आखिरी सिज्दा अर्ज करनेके लिये तमाम लोग जामा

मस्जिदके बाहर इकट्ठे हो गये। इस भीड़में वे भी शामिल थे, जो तमाशा देखनेकी मंशासे आये थे। इस इकट्ठी भीड़के सामने शाही हुक्मके मुताबिक संत सरमदको कत्ल कर दिया गया। कातिलने ज्यों ही सरको धड़से अलग किया, त्यों ही धड़ने कटे सिरको अपने हाथमें उठा लिया और सरको हाथमें लेकर धड़ जामा मस्जिदकी सीढ़ियोंपर चढ़ने लगा। उसी समय सारा दिल्ली शहर काँप उठा, मानो भूचाल आनेवाला हो। वहाँकी सारी भीड़ भयसे अत्यधिक आक्रान्त हो उठी। सारे देखनेवाले डरके मारे थर्रा उठे। उसी भीड़में एक और फकीर था। उस फकीरने पुकार कर कहा – ओ सरमद! यह इजहारे-तैश फकीरके लिये मुनासिब नहीं है।

इतना सुनते ही सर सहित वह धड़ सीढ़ियोंसे नीचे उतरने लगा और जहाँ कत्ल किया गया था, वहाँ आकर धड़ जमीनपर गिर पड़ा। उसी जगहपर संत सरमदको दफना दिया गया। यही वह जगह है। इसी जगह उनकी मजार है। आपको जो दिव्यानुभव हुआ है, वह संत सरमदकी भाव-गरिमाके कारण हो रहा है।

बाबाने तुरन्त मस्तक झुकाकर संत सरमदको प्रणाम किया।*

३ – मथुरा

दिल्लीसे तीर्थ-यात्रा-ट्रेन जब मथुराके समीप पहुँचनेवाली थी, तब मथुरा और वृन्दावनका नाम सुनकर बाबाकी भाव-भूमिकामें परिवर्तन आने लग गया। व्रजमण्डलकी स्मृति मात्रने बाबाके लिये भावोद्दीपनका कार्य किया। यह भूमि तो अपने हृदयाराध्यके महाह्लादकी रंग-स्थली है। मथुरा पहुँचकर बाबा और बाबूजी ठहरे बिड़ला मन्दिरकी धर्मशालामें जो मथुरा और वृन्दावनके मध्य स्थित है। बाबूजीने बाबासे कहा –

---

*इस दिव्यानुभव होनेके बाद बाबा चाहने लगे कि संत सरमदकी जीवनगाथा प्रकाशमें आये। आगे चलकर बाबाने यह कार्य आदरणीय श्रीलखपत बाबूको सौंपा। उन्हें संत सरमदके जीवनवृत्तको लिखनेमें बड़ा परिश्रम करना पड़ा। आवश्यक तथ्य मिल ही नहीं पाते थे। कई वर्षोंतक कार्यमें लगे रहनेके बाद यह जीवन-वृत्त तैयार हो पाया और बाबाने सिद्ध संत सरमदका यह जीवन-वृत्त हनुमानप्रसाद पोद्दार स्मारक समिति गोरखपुर, द्वारा प्रकाशित करवाया।

चलिये, यमुना-स्नानके लिये चला जाय।

'यमुना' शब्द सुनते ही बाबाका मन अन्तर्मुख होने लग गया। जब बाबा बाबूजीके साथ यमुना-स्नान कर रहे थे, तब बाबाके दृष्टि-पथपर बाबूजी नहीं थे, अपितु बाबाको बाबूजीके स्थानपर नीलसुन्दर दिखलायी दे रहे थे। अन्य जितने तीर्थ-यात्री स्नान कर रहे थे, वे तीर्थ-यात्री बाबाको यात्री नहीं, 'कुछ और' ही दीख रहे थे।

तीर्थ-यात्रियोंके साथ बाबूजी और बाबाने श्रीगोवर्धन गिरिराजजीकी परिक्रमा भी की। परिक्रमा करके जब सभी लोग लौटे, इसके ठीक अगले दिन बिड़ला मन्दिरकी धर्मशालामें प्रातःकाल एक संतसे बाबाका मिलन बड़ी विचित्र रीतिसे हुआ। भगवती श्रीवृषभानुनन्दिनीके निर्देशपर ही वे बाबाके दर्शनार्थ आये थे।

बाबा सदा ही ब्राह्म वेलामें उठ जाया करते थे, इस अभ्यासके अनुसार बाबा प्रातःकाल चार बजे उठ गये, पर विगत दिवस श्रीगिरिराजजीकी लम्बी परिक्रमा करनेके कारण थकानकी अधिकतासे बाबा शय्यापर लगभग सात बजेतक लेटे रहे। शीत-ऋतु होनेके कारण सूर्योदय अभी हुआ ही था। सूर्योदय होनेपर बाबाने ज्यों ही अपना कमरा खोला, त्यों ही एक विशेष बात घटित हो गयी।

बाबाने अपने कमरेके फाटकको खोला ही था कि एक संत चटसे बाबाके कमरेमें घुस गये और घुस करके उन्होंने कमरेकी सिटकनीको भीतरसे बन्द कर लिया। यह एक अनहोनी बात थी। किसीका भी साहस नहीं कि कोई बाबाके कमरेके अन्दर प्रवेश कर सके। बाबूजीकी आज्ञा पानेके उपरान्त ही कोई बाबाके कमरेमें जा सकता था। श्रीरामसनेहीजी तथा श्रीभगतजी ऐसे निजी परिकर हैं, जो सदा सावधान रहते हैं, जिससे कि किसीके द्वारा किसी प्रकारका व्यवधान बाबाके जीवन-क्रममें उपस्थित न हो। इतनी सावधानीके बाद भी यह एक अनहोनी बात अचानक हो गयी। बिना किसी विशेष प्रयोजनके इस प्रकारका साहस कोई कर भी नहीं सकता।

भीतरसे सिटकनीको बन्द करके वे संत हाथ जोड़कर बाबाके सामने खड़े हो गये। विनम्रताके आधिक्यमें उनकी कमर कुछ झुकी हुई थी। घुटने भी कुछ-कुछ मुड़े हुए थे। वे गौर वर्णके थे, उनकी दाढ़ी शुभ्र थी और मुख-मण्डलपर बड़ी कान्ति थी। इतना ही नहीं, ज्यों ही वे हाथ जोड़कर

खड़े हुए, उनके नेत्रोंसे झर-झर अश्रु प्रवाहित होने लगे।

इनके प्रवेश करते ही बाबाके मनमें कई प्रकारके विचार रह-रह करके उठ रहे थे कि ये श्रीरामसनेहीजी अथवा श्रीभगतजीके साथ नहीं आये हैं, अतः अवश्य ही इन्होंने मिलनेके लिये श्रीपोद्दार महाराजसे आज्ञा नहीं ली है। इसके अतिरिक्त प्रवेश करते ही सिटकनीका बन्द कर लेना सर्वथा अनपेक्षित व्यवहार है। यह सब तो है ही, पर इसीके साथ इनकी भाव-दशा और विनम्रता भी साधारण नहीं है। तथ्यका अन्वेषण करनेकी दृष्टिसे बाबाने सहज प्रकारसे पूछा – क्या मैं आपका परिचय जान सकता हूँ?

वे संत विभोर वाणीमें कहने लगे – मैं तो श्रीकिशोरीजीका एक तुच्छ सेवक हूँ। आज मध्य रात्रिके बाद स्वप्नमें श्रीकिशोरीजीने एक आदेश दिया। श्रीकिशोरीजीने मुझे आज्ञा दी कि जाओ, बिड़ला मन्दिरमें जाकर राधा बाबाका दर्शन कर आवो। वे मेरे निज जन हैं। उन्होंने स्वप्नमें ही मुझे कमरा दिखला कर दिशाका निर्देश भी कर दिया कि किस प्रकार जाना है और कहाँ जाकर दर्शन करना है। मैं तो श्रीकिशोरीजीकी आज्ञाके अनुसार आपके दर्शनार्थ आया हूँ।

यह सुनते ही बाबा तो दीनतामें गड़ गये। अन्तर्हृदय भावोंसे अत्यधिक उर्मिल हो उठा। बाबा समझ नहीं पा रहे थे कि मैं अपने सौभाग्यकी सराहना करूँ अथवा इनके सौभाग्यकी सराहना करूँ। अत्यधिक दैन्य भरे स्वरमें बाबाने कहा – यह मेरा परम पावन सौभाग्य है, जो आपका शुभ दर्शन मुझे मिला। आप तो श्रीकिशोरीजीके अनन्य और अत्यन्त कृपा-पात्र हैं। जिन्हें श्रीकिशोरीजी स्वप्नमें आदेश दें, उनकी महिमाका बखान भला कौन कर सकता है? कहिये, मैं आपकी क्या सेवा करूँ?

उन संत-प्रवरने कहा – बस, आपका दर्शन मिल गया, इससे अधिक और इसके अतिरिक्त अन्य क्या चाहिये? श्रीकिशोरीजीके आदेशानुसार आया और मेरा आना सार्थक हो गया।

बाबाने पूछा – आप कहाँ निवास करते हैं?

समागत संत-प्रवरने कहा – मैं तो वृन्दावनमें रहता हूँ, पर मुझे कोई नहीं जानता। भिक्षा-वृत्ति ही शरीर-निर्वाहका आधार है।

बाबाने पुनः जिज्ञासा की – आप बाहर कबसे खड़े हैं?

उन संत-प्रवरने बतलाया – लगभग दो-अढ़ाई घंटेसे खड़ा हूँ। स्वप्नादेशके बाद निद्रा खुल गयी। फिर स्नानादिसे निवृत्त होकर बिड़ला मन्दिरके लिये चल पड़ा। चार बजेके आस-पास मैं यहाँ आ गया था।

बाबाको बड़ा संकोच होने लगा कि मेरे कारण उनको दो-अढ़ाई घंटे हाथ जोड़े खड़े रहना पड़ा। इसके बाद बाबासे उनकी बहुत देरतक रसमयी बातचीत होती रही। दोनों ही एक दूसरेको रसके प्रवाहमें बहाये ले जा रहे थे। उन संत-प्रवरने अपने जीवनके कतिपय अनुभव भी सुनाये तथा बरसानेके एक प्रच्छन्न गृहस्थ-संतका परिचय भी दिया। उन संत-प्रवरने कहा – बरसानेमें एक गृहस्थ-संत हैं। उनका नाम है श्रीमोहिनीश्यामजी। ये बड़े ही गुप्त हैं। बाह्य रूप ऐसा बना रखा है कि कोई इनको पहचान ही न सके, पर ये हैं श्रीकिशोरीके परम कृपा-पात्र और गहरे प्रेममें छके रहनेवाले संत। यदि सम्भव हो तो आप उनका दर्शन करें।

लगभग आधे-पौन घंटेतक ये पूज्य संत-प्रवर बाबाके पास रहे होंगे। इस समय बाबाके आह्लादकी सीमा नहीं थी। 'मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता। नयन स्रवत जल पुलकित गाता।।' फिर उन्होंने जानेके लिये बाबासे आज्ञा माँगी। बाबा तो चाहते थे कि ये और अधिक समयतक बैठे रहें, पर उनको रोकना भी सम्भव नहीं था।

वे जानेके लिये खड़े हुए तो बाबाने कहा – आप ठहरिये। मैं आपको 'कल्याण' सम्पादक श्रीपोद्दार महाराजसे मिलाता हूँ।

उन्होंने कहा – अब मुझे किसीसे नहीं मिलना है। श्रीश्रीजीका आदेश हुआ, अतः आपका दर्शन करने आ गया।

वे जानेके लिये उत्सुक थे। बाबासे विदाई लेकर वे कमरेसे बाहर निकले। बाबा यह जानना चाहते थे कि ये किधर जाते हैं। बाबा बिड़ला धर्मशालाकी छतपर चले गये। बाबाने देखा कि वे भावोन्मत्त दशामें अपने हाथ ऊपर किये वृन्दावनकी ओर तीव्र गतिसे चले जा रहे हैं। उनके चालकी गतिको दौड़ ही कहना चाहिये।

बाबा कई बार कहा करते थे – उन संतने न तो अपना नाम बतलाया, न अपना विशेष परिचय दिया और न फिर बादमें वे कभी

मुझसे मिले। वह उनका प्रथम एवं अन्तिम मिलन था। कुछ पता नहीं कि अब उनका शरीर है अथवा नहीं।

उन संत-प्रवरके चले जानेके बाद बाबा शौच-स्नानादिसे निवृत्त हुए। स्नानादिके सारे कार्य तो आज यन्त्रवत् सम्पन्न हो रहे थे। वस्तुतः बाबाका मन किसी अतीन्द्रिय सुख-सागरमें लहरा रहा था।

'हृदय समात न प्रेम अपारा'।

* * *

इन संतके अतिरिक्त दो और संत बाबासे मिलनेके लिये आये। इसी बिड़ला मन्दिर धर्मशालाके एक कमरेमें बाबा विश्राम कर थे। बाबाके विश्राममें किसी प्रकारकी कोई बाधा उपस्थित न हो, एतदर्थ बाबूजीने ठाकुर श्रीघनश्यामजी और श्रीरामसनेहीजीको नियुक्त कर रखा था। ये दोनों लोग धर्मशालाके अन्दरवाले कुएँकी जगतपर बैठे हुए धूपका सेवन कर रहे थे और साथ-साथ बाबाके कमरेकी ओर देखते भी रहते थे। अचानक ठाकुरजीको दिखलायी दिया कि बाबाके कमरेके द्वारपर एक महात्मा खड़े हुए हैं। उनके शीशपर लम्बे-लम्बे भूरे-भूरे केश हैं, जो पीठपर कमरतक लहरा रहे हैं और उनके कान्तिमय गौर शरीरपर मात्र एक कटिवस्त्र है। बाबाने अपने कमरेका द्वार खोल रखा है और उन महात्माके सामने हाथ जोड़े हुए खड़े हैं। वे महात्मा भी हाथ जोड़े वन्दन कर रहे हैं। ठाकुरजी कुएँकी जगतपर बैठे हुए दूरसे इस दृश्यको देख रहे थे। थोड़ी देर बाद ठाकुरजीने रामसनेहीजीसे पूछा – ये साधु कौन हैं?

रामसनेहीजीने प्रश्न किया – कौनसे साधु?

ठाकुरजी – ये ही, जो बाबाके कमरेके सामने खड़े हैं।

रामसनेहीजी – वहाँ तो कोई साधु नहीं है।

ठाकुरजी – पर, मुझे तो दिखलायी दे रहे हैं।

रामसनेहीजी – मुझे तो कोई भी साधु दिखलायी नहीं दे रहा है।

इधर यह बात हो रही थी और उधर वे साधु बाबासे विदाई लेकर चल पड़े। उनका चलना था कि ठाकुरजी कुएँकी जगतसे तत्काल उठकर उनकी ओर बढ़े, जिससे उनका परिचय प्राप्त किया जा सके, परंतु वे

देखते-देखते अदृश्य हो गये। जितनी शीघ्रतासे ठाकुरजी आये थे, उतनी देरमें वे धर्मशालासे बाहर जा ही नहीं सकते थे। ठाकुरजीने इधर-उधर बहुत देखा, परंतु वहाँ कोई साधु-महात्मा दिखलायी दिये ही नहीं। जब वे दिखलायी नहीं दिये, तब ठाकुरजी बाबाके पास गये और पूछा – ये साधु कहाँके थे?

बाबाने प्रश्न किया – क्या तुमने उनके दर्शन किये?

ठाकुरजीने कहा – हाँ, अभी-अभी एक साधु आपसे मिलकर गये हैं।

बाबाने बतलाया – एक नहीं, दो साधु थे।

बाबाने पुनः कहा – तुमको एकका दर्शन हो गया, यही बहुत है अन्यथा इनका दर्शन ही कठिन है। ये दोनों साधु सिद्ध संत हैं और कुसुम सरोवरपर रहते हैं। ये मात्र मिलनेके लिये यहाँ आये थे।

ठाकुरजीने इसीमें अपना सौभाग्य माना कि कम-से-कम एक संतका पावन दर्शन तो मिल ही गया।

४ – उज्जैन

मथुरासे चलकर तीर्थ-यात्रा ट्रेन प्रातःकालके समय उज्जैन पहुँचनेवाली थी। स्टेशनपर कड़कड़ाती शीतमें लोगोंकी भीड़ बड़ी उत्सुकताके साथ ट्रेनकी प्रतीक्षा कर रही थी। 'कल्याण' पत्रिका एवं धार्मिक पुस्तकोंकी आध्यात्मिक निधिको पढ़ देखकर जिन बाबूजीके प्रति लोगोंका हृदय अपार श्रद्धासे भरा हुआ था, उन धर्म-विभूतिका स्वागत करनेके लिये सबके हृदय प्रफुल्लित हो रहे थे। तीर्थ-यात्रा-ट्रेन ज्यों ही प्लेटफार्मपर आयी, उसी समय ढोलक-मजीरे खनक उठे। हरिकीर्तनकी ऊँची ध्वनिसे दूर-दूरका वातावरण गूँज उठा। गाड़ीके रुकते ही लोग पुष्पमालाएँ लेकर बाबूजीके डिब्बेकी ओर दौड़ पड़े। बाबूजीने गाड़ीसे उतरते ही हाथ जोड़कर सबका स्वागत किया। उपस्थित जन समुदायने देखा कि हमारे सामने तो साक्षात् प्रेमावतार ही खड़े हैं। चारों ओरसे पुष्प-वर्षा होने लगी और बाबूजीको माला पहनानेके लिये लोग आने लगे। उस समय ऐसा लगता था कि बाबूजी पुष्पमालाओंसे आवृत हो गये हों।

वहीं प्लेटफार्मपर माइकपर श्रीगोस्वामीजी द्वारा प्रातःकालीन प्रभु-प्रार्थना एवं सुन्दर पदोंका गायन हुआ। चारों दिशाओंमें भक्तिकी भावना परिव्याप्त हो गयी। दिनमें भगवान श्रीमहाकालके मन्दिरके प्रांगणमें बाबूजीका प्रवचन हुआ। उस प्रवचनका हजारों श्रोताओंपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि यह प्रसंग पारस्परिक चर्चाका एक प्रधान विषय बन गया। उज्जैनमें बाबाको अपने एक पूर्व-जन्मकी बड़ी पुरातन स्मृति हो आयी। बाबा कई बार कहा करते थे कि मुझे अपने चार पूर्व-जन्मोंकी स्मृति है। एक जन्ममें बाबा उज्जैनमें थे। उज्जैन पहुँचते ही पूर्व-जन्मके दृश्य बाबाको याद आने लग गये।

५ – चित्तौड़गढ़-उदयपुर

उज्जैन-इन्दौर-ओंकारेश्वरसे चलकर तीर्थ-यात्री राजस्थान आये। सभी लोग चित्तौड़गढ़ देखनेके लिये गये। चित्तौड़गढ़की सीमाके भीतर प्रवेश करते ही बाबाकी भावनाएँ आर्द्र होने लग गयीं। इस गढ़के साथ राजपूत रमणियोंके अखण्ड सुहाग और राजपूत वीरोंके अद्‌भुत शौर्यकी बलिदानी स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं। अपने धर्मपर सर्वस्व न्यौछावर कर देनेके लिये कटिबद्ध उस राजपूती सौन्दर्य और राजपूती शौर्यने वासनालोलुप एवं मदान्ध मुसलमानी तलवारके सामने झुकना जाना ही नहीं। यह चित्तौड़गढ़ ही साक्षी देता है कि प्राणोत्सर्गकी उन अमर गाथाओंसे भारत भूमिका नारी-जीवन और पुरुष-जीवन कितना अधिक गौरवान्वित हो उठा। चितौड़गढ़की एक-एक दीवाल और यहाँकी भूमिका एक-एक कण उनके सतीत्व एवं वीरत्वके गीत गाता रहता है। बाबाको महान आत्माहुतिके वे ऐतिहासिक प्रसंग याद आने लगे कि उन्होंने किस प्रकार अपने सतीत्वकी और हिन्दुत्वकी रक्षाके लिये जीवनकी बलि धर्मकी वेदीपर चढ़ा दी थी! बाबाको अपने आँसू रोक पाना कठिन हो गया। बाबा बार-बार अपने वस्त्रोंसे अपनी आँखोंको और अपने कपोलोंको पोंछते रहते थे। जिस स्थानपर कुमारियोंने और रानियोंने जलती चितामें स्वयंको स्वाहा करके अपने शील और सुहागके पावित्र्यकी रक्षा की थी, उस स्थानका दर्शन करते ही बाबाकी भावनाएँ अत्यन्त विकल हो उठीं। बाबाने उस आत्माहुति-स्थलीको प्रणाम किया और वहाँकी परम पवित्र रजको अपने मस्तकपर लगाया।

शील और शौर्यकी वीर-गाथाओंके कारण चित्तौड़गढ़ विख्यात तो है ही, उसकी ख्यातिका एक कारण और भी है वहाँकी दिव्य भक्ति-गाथा। मोरमुकुटधर गिरिधर गोपालके प्रेममें दीवानी मीराके भक्ति-विह्वल एवं भाव-विभोर जीवनने चित्तौड़गढ़के नामको अमरता और उज्ज्वलता प्रदान की है। चित्तौड़गढ़के मन्दिरमें बाबा और बाबूजीने मीराबाईके परमाराध्य श्रीगिरिधर गोपालके दर्शन किये। उसी समय किसी प्रशासकीय अधिकारीने धीरेसे ऐसा बतलाया कि मीराबाई जिनकी उपासना करती थीं, वह श्रीविग्रह तो वस्तुतः उदयपुरके राजमहलमें है एवं श्रीराणा परिवारकी निजी निधि है। उसका दर्शन सहज सम्भव नहीं है। हो सकता है कि यदि कुछ प्रयास किया जाय तो आप लोगोंको दर्शन मिल जाय।

'कल्याण' सम्पादकके नाते बाबूजीका यश चारों ओर है और बाबूजीके नामपर दर्शन होनेकी विधि बैठ गयी। उन प्रशासकीय अधिकारीके सौहार्द एवं सहयोगसे बात शीघ्र बन गयी। बाबूजी और बाबा उदयपुरके राजमहलमें श्रविग्रहके दर्शनार्थ गये। बाबूजी और बाबाके साथ एक-दो व्यक्ति और होंगे। उस श्रीविग्रहकी छवि देखकर बाबा तो मोहित हो गये। छोटा होते हुए भी वह श्रीविग्रह बड़ा आकर्षक था। दर्शन मात्रसे हृदयके भाव रह-रह करके उमड़ रहे थे। उनका दर्शन करके जी भरता ही नहीं था। हृदय इतना उर्मिल हो उठा था कि मीराबाईके कई पदोंकी कई पंक्तियाँ बाबाकी स्मृतिमें उभरने लगीं और उभर उठी एक अति विशेष बात। मीराबाईने बाबूजीके बारेमें एक सूचना एक संतको दी थी। उन संतको जब मीराबाईके साक्षात् दर्शन हुए तो उन्होंने अनेक प्रश्न पूछे थे और उन प्रश्नोंमें एक प्रश्न यह भी था कि श्रीपोद्दार महाराजकी आध्यात्मिक स्थिति क्या है? इस प्रश्नका उत्तर देते हुए मीराबाईने उन संतसे कहा था कि 'हनुमानप्रसादका सूक्ष्म शरीर बिलकुल श्रीप्रियाजीका स्वरूप हो गया है।' मीराबाईके वंशजोंका वह महल, मीराबाईके आराध्यका वह दर्शन और मीराबाईके अधरोंका वह उत्तर, इन सब बातोंसे बाबाके हृदयमें भावका ज्वार आ गया।

६ – श्रीनाथद्वारा

उदयपुरके पास ही श्रीनाथद्वारा है, जहाँ परम पूज्य महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीके सेव्य श्रीश्रीनाथजी महाराज विराज रहे हैं। वहाँ बाबाको

श्रीश्रीनाथजी महाराजके दर्शनका अवसर दो बार मिला। मंगला-दर्शन एवं शृङ्गार-दर्शन करके मन स्वतः दिव्य भावोंसे भर गया। श्रीश्रीनाथजी महाराजका दर्शन पहली बार होते ही अन्तर किसी अभिनव भावसे भावित हो गया। भावाभिभूत होनेसे बाबाके शरीरमें पर्याप्त शिथिलता परिव्याप्त हो गयी। मन्दिरमें एक किनारे बाबा पर्याप्त समयतक निश्चेष्ट खड़े रहे। बहुत बादमें बाबाने कहा था – यह कहना बड़ा कठिन है कि श्रीश्रीनाथजी महाराजकी अहैतुकी कृपा किसको किस प्रकार बहा ले जायेगी।

नाथद्वाराके बाद अजमेर, सिद्धपुर, द्वारका, जूनागढ़, डाकोर आदि अनेक तीर्थोंका दर्शन करके यात्रा-ट्रेन बम्बई पहुँची। बम्बईमें बाबूजीका बड़ा भव्य स्वागत हुआ। बम्बईसे प्रस्थान करनेके बाद यात्रियोंने नासिक, पण्ढरपुर, किष्किन्धा, मैसूर, बंगलौर, कालहस्ती आदि-आदि महत्त्वपूर्ण स्थानोंके दर्शन किये। तिरुपतिमें श्रीबालाजी श्रीवेंकटेश्वर भगवानका अति विख्यात मन्दिर है।

७ – तिरुवण्णमल्लै

तिरुपति श्रीबालाजी महाराजका दर्शन करके सभी यात्री तिरुवण्णमल्लै गये। यहाँ श्रीरमण महर्षिकी समाधि है। बाबाने समाधिको दण्डवत् प्रणाम किया। प्रणाम करते ही बाबाको अमित भावोद्रेक हुआ। आँखोंसे अश्रुपात होने लगा। बाबाने संवरण करनेका बहुत अधिक प्रयास किया, परंतु सफलता नहीं मिली। एक बार नहीं, कई बार प्रयत्न करनेके बाद भी जब अश्रुका प्रवाह अवरुद्ध नहीं हो पाया तो बाबा समाधिके पास ही आँखें बन्द करके बैठ गये। भावोद्रेक इतना अधिक था कि लगभग आधे घंटेतक अनर्गल अश्रु-प्रवाहसे कपोल भीगते रहे। उस समय बाबाकी स्थिति विचित्र थी। आधे घंटेके बाद जब भाव किंचित् प्रशमित हुआ तो बाबा अपनी आँखों और अपने कपोलोंको पोंछते हुए खड़े हो गये। वहींपर एक स्त्री खड़ी-खड़ी बाबाकी विचित्र भाव-दशाको देख रही थी। जब बाबा खड़े हुए तो उस महिलाने अँगरेजीमें बाबासे कहा – मेरे योग्य कोई सेवा हो तो बतलाइये।

बाबाने कहा – मातः! मैं यहाँके लिये एक नवीन व्यक्ति हूँ।

यहाँपर जो-जो दर्शनीय स्थल हैं, वे सब यदि आप दिखला सकें तो बड़ी कृपा होगी।

उस महिलाने इस अनुरोधको स्वीकार कर लिया। वह लगातार आधा घंटातक साथ घूमती-फिरती रही और उसने महत्त्वपूर्ण स्थलों एवं वस्तुओंके दर्शन करवाये। उस महिलाके सरल व्यवहार एवं सेवा-भावकी बाबाके मनपर गहरी छाप पड़ी।

८ – कालड़ी

तिरुवण्णमल्लैके उपरान्त श्रीरंगम्, श्रीविल्लीपुत्तूर आदि अनेक स्थानोंका दर्शन करते हुए तीर्थ-यात्री कालड़ी पहुँचे। हिन्दू धर्मके महान उद्धारक भगवान श्रीआदिशंकराचार्यजीका जन्मस्थान दक्षिण भारतके कालड़ी नगरमें है। यहाँपर बाबाने, बाबूजीने और अन्य सभीने श्रीआदिशंकराचार्यजीके मन्दिरका दर्शन किया। पेरिवार नदीके तटपर भगवान श्रीआदिशंकराचार्यजीका तथा उनकी माताजीका मन्दिर है। मन्दिरमें प्रवेश करते ही बाबाको अनेक प्राचीन प्रसंग याद आने लगे। बाबाके अन्तरमें पुरातन स्मृतियोंका ज्वार-सा उठ आया। पहले बाबाकी शांकरमतमें अगाध आस्था थी (और अब भी है)। मन्दिरमें प्रवेश करते ही भगवान शंकराचार्य द्वारा प्रवर्तित अनेक सिद्धान्त-वाक्योंकी आवृत्ति स्वतः मन-ही-मन होने लग गयी और तभी स्मृति हो आयी उस परम दिव्य आत्म-परिणंतिकी। जो बाबा पहले शांकर मतानुयायी निष्ठावान अद्वैतवादी थे, वे ही अद्वैत-निष्ठ बाबा किस प्रकार बाबूजीके संस्पर्श एवं सम्पर्कमें साकारोपासकके रूपमें परिणत हो गये और किस प्रकार मधुरोपासनामें गहरे उतर गये, ये प्रसंग बाबाके स्मृति-पटलपर नृत्य करने लगे। जिन श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी भगवतीकी उपासना श्रीआदिशंकराचार्यजी महाराजने की थी, उन्हींकी उपासना बाबाने भी की थी और वैसी ही सफलता भी मिली थी। कालड़ीके मन्दिरमें जानेपर बाबाको यह अनुभव हुआ कि वह स्थान अभी भी आध्यात्मिक शक्तिका पुञ्ज है और आध्यात्मिक दृष्टिसे बड़ा सशक्त है।

९ – कन्याकुमारी

इसके बाद विभिन्न स्थानोंका दर्शन करते हुए तीर्थ-यात्री जिस दिन कन्याकुमारी पहुँचे, उस दिन फाल्गुनी पूर्णिमा थी। कन्याकुमारी भारतकी

दक्षिणी सीमा है। यहाँपर कन्यास्वरूपा कुमारी पार्वतीजीका मन्दिर है। जनश्रुतिके अनुसार भगवती पार्वती यहाँ एक पैरपर खड़ी रहकर भगवान शिवशंकरकी प्राप्तिके लिये तप कर रही हैं और सतयुग आनेपर भगवान शिवशंकरसे परिणय होगा। भगवती पार्वतीका यह मन्दिर समुद्र तटपर ही है। दक्षिण दिशामें भारतका यह ऐसा सुदूरतम बिन्दु है, जहाँ तीन सागरोंका – बंगालकी खाड़ी, अरब सागर तथा हिन्द महासागर, इन तीनोंका संगम होता है। इतना ही नहीं, इस संगम-बिन्दुके दक्षिणमें दक्षिणी ध्रुवतक केवल अथाह जल है। इसी संगमपर बाबूजी और बाबाने सागर-स्नान किया। संगम-बिन्दुपर स्नान करते समय बाबा सोच रहे थे कि यह एक ऐसा बिन्दु है, जिसके आगे कोई भूमि-खण्ड है ही नहीं, केवल जल-ही-जल है, इसी प्रकार जीवनमें एक ऐसा भी बिन्दु आता है, जिसके आगे लौकिकता रह ही नहीं जाती, शेष रह जाता है मात्र भावोल्लास। जीवनमें सदा और सर्वथा भावका सिन्धु लहराता रहता है। स्नानके समय लहराते सिन्धुको देखकर बाबाके मनका भाव-सिन्धु बड़ा लहरा रहा था।

तीन सागरोंके संगमपर सूर्यास्तके समय डूबते हुए सूर्यका दृश्य बड़ा ही भव्य होता है। सभी यात्रियोंने इस दृश्यका दर्शन किया। आज फाल्गुनी पूर्णिमा होनेके कारण रात्रिके समय आकाशमें रुपहला चाँद हँस रहा था। रुपहली चाँदनीमें पृथ्वीका कण-कण चमक रहा था और चमक रही थी सागरकी लहरें भी। जल-थल-नभ सर्वत्र रजत शोभाका साम्राज्य था। इस शोभासे आकृष्ट होकर, मुख्यतः सागरकी चमकती उत्ताल तरंगोंके लहरानेसे उत्पन्न होनेवाली शोभापर विमुग्ध होकर बाबाने सागरके तटपर बैठनेके लिये अपना आसन बिछवाया। जब बाबा अपना आसन सागरके तटपर लगवा रहे थे, तब लोगोंने बहुत मना किया और बहुतोंने समझाना चाहा कि यहाँ बैठना खतरेसे खाली नहीं है। पूर्णिमाके दिन उमड़ते सागरकी न जाने कौन-सी उत्ताल तरंग कब किसको सागरके बीच खींच ले जाय, परंतु बाबा तो आज अपने दूसरे ही भाव-सिन्धुमें लहरा रहे थे। यात्री लोग तो रात्रिके समय होलिका-दहनके रूपमें होलीका उत्सव मना रहे थे, किन्तु बाबाके भाव-राज्यकी होली कुछ निराली रीतिकी थी। लोगों द्वारा मना किये जानेके बाद भी बाबा सागरके तटपर बैठ गये और रातभर बैठे रहे। ऊपर रुपहला चाँद, सामने रुपहला सागर और पार्श्वमें रुपहला

तट-प्रान्त, इस रुपहली रूप-राशिने बाबाको पहुँचा दिया अनूप रूपके भूप, भूत-वर्तमान-भविष्यके पुञ्जीभूत रूप श्रीप्रिया-प्रियतमके रंगोल्लासमें। बाबा अपने भावराज्यमें रात्रिभर लहराते रहे। ब्राह्म-मुहूर्तमें भाव-विभोर बाबा यही कहने लगे – जीवनमें व्यक्ति उस बिन्दुपर अपना आसन लगा ले, जिसके बाद रह जाय केवल भावका उछलता-उमड़ता सागर। जीवनमें पद-पदपर पल-पल रस उछलता रहे, उमड़ता रहे।

१० – श्रीरामेश्वरम्

जब तीर्थ-यात्री लोग श्रीरामेश्वरम् पहुँचे, तब बाबा रामझरोखा नामक स्थानका दर्शन करनेके लिये गये थे। यह स्थान श्रीरामेश्वरमूके मुख्य मन्दिरसे कुछ मीलकी दूरीपर है और एक बहुत छोटी पहाड़ीके ऊपर है। बाबाके साथ अन्य कई तीर्थयात्री गये थे। ये लोग अपराह्नकालमें गये थे और रामझरोखासे लौटते-लौटते सूर्यास्तका समय समीप हो आया था। आज सोमवारका दिन था और ठीक सूर्यास्तके समय बाबाको भगवान शिवकी अर्चना करनी थी। यह किसी भी प्रकारसे सम्भव नहीं था कि सूर्यास्तके समयतक श्रीरामेश्वरम् नगरमें डेरेपर पहुँचा जा सके। बाबाके मनमें चिन्ता व्याप्त हो गयी कि क्या श्रीशिवार्चनका नियम खण्डित होगा? वे एक क्षणके लिये खड़े हो गये और भगवान शिवका स्मरण करने लगे। फिर उन्होंने अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ायी। समीपमें ही मीठे जलका एक सरोवर दिखलायी दे गया। सम्भवतः इस सरोवरका नाम सुग्रीवकुण्ड है। वे तत्क्षण सरोवरके तटपर आये। सरोवरके जलसे हाथ धोकर उन्होंने तटकी बालू हाथमें ली और भगवान शिवकी सैकत-प्रतिमाका निर्माण किया। ज्यों ही सूर्यास्त हुआ, बाबाने सरोवरके शीतल और पवित्र जलसे भगवान शिवका श्रद्धा-भक्तिसे अभिषेक किया। इस प्रकार बाबाने अपने नियमका निर्वाह किया।

बाबा कहा करते थे कि देवार्चनके लिये जो नियम और क्रम स्वीकार किये गये हों, उसकी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। देवार्चनके लिये जो समय और जो प्रक्रिया निर्धारित की जाती है, उस समय देवजगत प्रतीक्षा करता है।

११ – मदुराई

रामेश्वरम्‌के बाद तीर्थयात्री लोग मदुराई आये। भगवती मीनाक्षी देवीके अति विशाल मन्दिरके कारण मदुराईकी ख्याति बहुत है। जब तीर्थयात्री लोग दर्शन करनेके लिये मन्दिरमें गये तो भगवतीके गर्भ-गृहका पट आधा घंटे बाद बन्द होनेवाला था। दर्शनार्थियोंकी संख्या छः सौसे अधिक थी। सभी सुविधापूर्वक तथा शीघ्र दर्शन कर सकें, एतदर्थ बाबाने सभीको पंक्तिबद्ध खड़ा कर दिया। बाबा एक-एक करके लोगोंको भेजने लगे। बाबूजी गर्भगृहके द्वारपर खड़े हो गये लोगोंको दर्शन करानेके लिये। मन्दिरके प्रमुख अधिकारियोंको ज्यों ही बाबूजीका परिचय मिला, त्यों ही धार्मिक 'कल्याण' पत्रिकाके यशस्वी सम्पादक एवं धार्मिक संस्था गीताप्रेसके सफल कर्णधारके नाते मन्दिरकी ओरसे उनको बहुत सम्मान दिया गया। उस समादरको देखकर बाबूजीको बड़ा संकोच हो रहा था।

दर्शनार्थी एक-एक करके आ रहे थे, इसके बाद भी मुख्य पुजारीजी रह-रह करके शीघ्रता करनेको कह रहे थे। पट बन्द होनेका समय समीप देखकर वे बहुत उतावलापन दिखला रहे थे, परंतु क्या किया जाय? दर्शनार्थियोंकी संख्या ही बहुत अधिक थी। जैसे-तैसे सबने दर्शन किया। सबको दर्शन कराकर फिर बाबा भगवतीका दर्शन करनेके लिये आगे आये। बाबाको देखते ही मन्दिरके मुख्य पुजारीजीको एक प्रकारका भावावेश हो आया। वह भगवती मीनाक्षी देवीका ही दिव्यावेश था। उसी दिव्यावेशमें पुजारीजीने गर्भ-गृह-द्वारपर खड़े हुए अति समीप बाबूजीसे अंग्रेजीमें पूछा –Is it your Swamiji? (क्या ये आपवाले ही स्वामीजी हैं?)

बाबूजीने प्रश्नका स्वीकृति सूचक उत्तर दिया। बाबाको देखते ही वे स्तम्भित हो गये। वे बाबाको एकटक देखने लगे। कहाँ तो वे पहले बड़ा उतावलापन दिखला रहे थे और कहाँ अब वे जड़वत् स्थिर खड़े थे। पुजारीजीकी बड़ी-बड़ी आँखें आरक्त और विस्फारित हो उठीं। भावाविष्ट दशामें वे कुछ देर मौन खड़े रहे। प्रकृतिस्थ होनेके बाद वे भगवती मीनाक्षीके श्रीविग्रहकी ओर बढ़े और उनके कण्ठ-देशमें जो सुन्दर-से-सुन्दर माला थी, उसे लेकर बाबाके गलेमें दूरसे पहना दी।

'अपरस'में होनेके कारण निकटसे पहनाना सम्भव नहीं था। प्रसादी माला कण्ठमें आते ही बाबाका हृदय आह्लादसे भर गया। मनके भीतर-ही-भीतर बाबा पुकार-पुकारकर कहने लगे – माँ तेरी कृपा, असीम कृपा, अहैतुक कृपा, अद्‌भुत कृपा, परम कृपा। मंगलमयि! वात्सल्यमयि!! तेरे श्रीचरणोंको प्रणाम, बार-बार प्रणाम, अनन्त-अनन्त प्रणाम!

१२ – वेदारण्यम्

इसके बाद कुम्भकोणम् आदि कई स्थानोंका दर्शन करते-करते तीर्थ-यात्रामें वेदारण्यम् नामक स्थान भी आया। यह स्थान समुद्र-तटपर ही है। वेदारण्यम्‌के निवासी बाबूजीको अपने नगरपर आयी हुई एक विपत्तिका वर्णन सुनाने लगे। यह वर्णन बाबा भी सुन रहे थे। वहाँके निवासियोंने बतलाया – कुछ समय पहले सागरकी एक ऐसी विशाल और भीषण लहर आयी कि सारा वेदारण्यम् नगर डूब गया। एकके बाद दूसरी और दूसरीके बाद तीसरी, कुल तीन भयंकर लहरें आयीं। ये तीनों लहरें पाँच-पाँच मिनटके अन्तरसे आयीं और चली गयीं। पहली लहर इतनी ऊँची थी कि रेलवे स्टेशनकी छतपर लगे हुए लोहेके डण्डेका शीर्ष भाग भी डूब गया। पहली लहरसे दूसरी लहर ऊँची थी और दूसरीसे तीसरी तो और भी अधिक ऊँची थी। हजारों पशु-पक्षी, नर-नारी बह गये और मर गये। धन-जनकी अपार क्षति हुई। उस हानिका अनुमान भी सम्भव नहीं है। कौन कल्पना कर सकता था कि ऐसी ऊँची लहर कभी आयेगी और सारा नगर डूब जायेगा।

जगतकी दृष्टिसे यह विवरण खिन्नता प्रदान करनेवाला ही है, परंतु बाबाके चिन्तनका स्वरूप कुछ और ही था। बाबाने इस प्रसंगका अपने ढंगसे अर्थ निकाला। वेदारण्यम्‌की यह घटना अध्यात्म-पथके साधकोंके लिये एक नवीन संदेशका वाहक बन गयी। कोई भी ऐसी विशाल लहरके उठनेकी कल्पना नहीं कर सकता था, जो सबको डुबा दे और सब कुछ बहा ले जाये। इसी प्रकार यह नहीं कहा जा सकता कि किसी संतके जीवनमें कब महाभावका सागर उछलेगा और कब उसकी विशाल लहरें निकटवर्ती लोगोंको सदाके लिये भाव सागरमें डुबा देंगी। बस, जैसे बने, वैसे किसी महान संतके सदा निकट रहनेका ढंग बना

लेना चाहिये। उस महान संतके जीवनमें महाभावका सागर कभी-न-कभी तो उछलेगा अवश्य और अवश्य बात बन जायेगी तब निकटवर्ती श्रद्धालु लोगोंकी। संतके निकट-सामीप्यमें रहनेवालोंका भविष्य कितना उज्ज्वल है, इस उज्ज्वलताको समझानेके लिये बाबा अनेक बार वेदारण्यम्का उदाहरण लोगोंको सुनाया करते थे।

१३ – चिदम्बरम्

वेदारण्यम्के बाद तीर्थ-यात्री लोग चिदम्बरम् पहुँचे। भगवान शिवकी उपासनामें चिदम्बरम्का एक विशेष स्थान है। दक्षिण भारतके पाँच शिवलिंग बड़े विख्यात हैं, पञ्च-तत्त्वोंमेंसे एक-एक तत्त्वके लिये एक-एक शिवलिंग। १ – शिवकाञ्चीमें क्षिति-तत्त्व लिंग, २ – जम्बुकेश्वरमें जल-तत्त्व लिंग, ३ – अरुणाचलम्में अग्नि-तत्त्व लिंग, ४ – कालहस्तीमें वायु-तत्त्व-लिंग और ५ – चिदम्बरम्में आकाश-तत्त्व लिंग। चिदम्बरम्में बाबाको एक विशेष अनुभव हुआ। बाबाने भगवान शिवके मन्दिरमें ज्यों ही प्रवेश किया, उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति ध्यानस्थ बैठे हुए हैं। उनके रोम-रोमसे प्रकाश फूट रहा है। उनके शरीरके चारों ओर तेजका एक अद्भुत वलय है। वे आँखें बन्द करके बैठे हुए हैं। वे बन्द आँखें भी बड़ी विशाल हैं और आँखोंके ऊपरकी भौंहें भी बड़ी-बड़ी हैं। शीशकी लम्बी-लम्बी जटाएँ भूमिका स्पर्श कर रही हैं। उन तेज-पुञ्ज व्यक्तिको देखकर बाबाका मस्तक नत हो गया। बाबा अञ्जलि-बद्ध होकर उनके सामने खड़े हो गये और मन-ही-मन उनसे प्रार्थना करने लगे – आप अपना परिचय दें कि आप कौन हैं? बार-बार आपकी वन्दना करता हूँ। यह मेरा परम सौभाग्य है कि आपके पुनीत दर्शनका अवसर मुझ साधारण व्यक्तिको मिल सका।

कुछ देरतक बाबा मन-ही-मन प्रार्थना करते रहे। थोड़ी देर बाद उन ध्यानस्थ व्यक्तिने अपने नेत्र खोले। उन नेत्रोंमें कैसी शान्ति, कैसी प्रसन्नता, कैसी आत्मीयता, कैसी सहृदयता भरी हुई थी, यह वाणीका विषय बन ही नहीं सकता। बाबा उन महात्माका दर्शन कर रहे थे, तभी अचानक वे अदृश्य हो गये। उनके अदृश्य होते ही बाबाको भान हो गया कि वे तो स्वयं भगवान शिव थे, जिन्होंने दर्शन देनेकी कृपा की। जिस रूपमें भगवान शिवने दर्शन दिये, इसे बाबा भविष्यमें कभी भूल

नहीं पाये।

१४ – पाण्डीचेरी

चिदम्बरम्के पास ही पाण्डीचेरी है, जो योगीराज अरविन्दकी योग-साधनाका प्रधान स्थल रहा है। पाण्डीचेरी पहुँचनेपर श्रीअरविन्दाश्रममें पूज्या माँके दर्शन करनेका तीन बार अवसर मिला। जब माँके दर्शन हुए, तब बाबाको उनकी नीली-नीली आँखोंसे दिव्य प्यारकी किरणें प्रसरित होती हुई दिखलायी दीं। बाबूजीने पूज्या माँसे भगवती श्रीराधाके बारेमें एक प्रश्न पूछा। प्रश्नका जो उत्तर पूज्या माँने दिया, वह उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्वके सर्वथा अनुरूप था। पूज्या माँके उत्तरमें भगवती श्रीराधाके इन्द्रियातीत प्रीतिकी व्याख्या थी, ऐसी प्रीति, जिसके आदि-मध्य-अन्तमें समर्पण-ही-समर्पण है।

१५ – बडुइअम्मन कोइल (VADUI AMMAN KOIL)

मद्रासमें बाबाने भगवती श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीकी अर्चना विशेष रूपसे करवायी। भगवान श्रीकृष्णके निर्देशपर बाबाने भगवती श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीकी सविधि एवं सविस्तार अर्चना की थी और सन् १९५१ में बाबाको भगवती श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीके दर्शन भी हुए थे। जब तीर्थ-यात्रा-ट्रेन दक्षिणमें भ्रमण कर रही थी, तब बाबाने बड़ा प्रयास किया कि भगवती श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीका कोई ऐसा प्राचीन मन्दिर मिल जाये, जिसमें भगवतीके हाथमें शास्त्रोक्त चारों आयुध हों। ये चार आयुध हैं – पाश, अंकुश, पुष्पवाण एवं इक्षुकोदण्ड। मदुराईमें भगवती मीनाक्षीजीके मन्दिरमें भगवतीके हाथमें ये चारों आयुध हैं, परंतु यह मन्दिर नवीन रचना है। बाबा तो किसी प्राचीन मन्दिरकी खोजमें थे। बाबाको ऐसी आशा थी कि भगवती श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी श्रीआदिशंकराचार्यजीकी परमाराध्या रहीं हैं, अतः दक्षिण भारतमें कहीं तो ऐसा मन्दिर मिलना ही चाहिये। मद्रास शहरसे बाहर लगभग दस-बारह मीलकी दूरीपर एक स्थान वडुइअम्मन कोइल मिला, जहाँ चारों आयुध सहित भगवती श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीका प्राचीन मन्दिर है। वहाँ जाकर बाबाने भगवती श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीकी विधिपूर्वक अर्चना की।

१६ – श्रीजगन्नाथपुरी

श्रीजगन्नाथपुरी पहुँचनेपर बाबूजीको और बाबाको बड़ा भावोद्दीपन हुआ। श्रीजगन्नाथपुरी वह धाम है, जिसका श्रीचैतन्य महाप्रभुके जीवनसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। श्रीचैतन्य महाप्रभुकी महाभावमयी गम्भीरा लीला इसी धाममें हुई थी और अन्तमें श्रीचैतन्य महाप्रभु मुख्य मन्दिरके पावन श्रीविग्रहमें सशरीर समाविष्ट हो गये थे। श्रीजगन्नाथपुरीकी पवित्र भूमिपर पैर रखते ही बाबा भावाविष्ट हो गये और जबतक वहाँ रहे, तब-तक भावाविष्ट ही रहे। जब बाबा सागर-स्नानके लिये गये तो बाबाकी भाव-दशा और भी गहरी हो गयी। बाबूजी इस भावदशाकी स्थितिको समझते थे, अतः सदा सावधान रहे और बाबाका हाथ पकड़े रहते थे। श्रीजगन्नाथपुरीके सागर-तटपर तरंगित लहरोंका दृश्य बाबाके भावोंको न जाने कहाँसे कहाँ बहा ले गया। उमड़ती लहरोंको देखकर बाबाको श्रीचैतन्य महाप्रभुके जीवनका वह प्रसंग स्मरण हो आया, जब वे श्रीकृष्णालिंगनकी लालसासे प्रभावित होकर समुद्रमें कूद पड़े थे। आज सागरकी हर उत्ताल लहरके साथ बाबाकी आत्म-विस्मृतिकी गहराई अधिकाधिक होती चली जा रही थी। गहराई इतनी अधिक हो गयी कि एक मात्र श्रीकृष्ण ही स्मृतिमें रह गये। उत्ताल तरंगें ऐसी लग रही थीं मानो ये प्रियतम श्रीकृष्णकी विशाल विस्तृत भुजाएँ हों, जो मिलनेके लिये बुलावा दे रही थीं। श्रीचैतन्य महाप्रभुके उस प्रसंगकी आवृत्ति आज हो जाती, यदि बाबूजी बाबाका हाथ नहीं पकड़े होते। बाबूजी जानते थे कि सागर-दर्शनसे बाबाके हृदयमें महाभावोद्दीपन हो सकता है। इसी कारण हाथ पकड़े-पकड़े सागर-स्नान किया और वापस लौटे।

जिस दिन जगन्नाथपुरीसे तीर्थ-यात्रियोंको प्रस्थान करना था, उसी दिन विचार यही था कि सभी मन्दिरका प्रसाद पाकर चलें, परंतु किसी कारणसे मन्दिरमें भोग नहीं लग पाया। ट्रेनके चलनेका समय क्रमशः समीप आता चला जा रहा था। जब पूर्णतः निराशा व्याप्त होने लगी तो बाबाने भगवान श्रीजगन्नाथजीसे प्रार्थना की – क्या आपके द्वारसे प्रसाद पाये बिना ही जाना होगा?

इधर बाबाने मन-ही-मन यह प्रार्थना की, उधर तत्काल श्रीरथजी पंडाने आकर भोग लगा दिये जानेकी सूचना दी और उन्होंने प्रसाद

ग्रहण करनेके लिये अनुरोध किया। श्रीरथजीकी बाबा और बाबूजीके प्रति बड़ी श्रद्धा थी। बाबाका मन प्रसन्न हो उठा और फिर सभी तीर्थ-यात्रियोंने प्रसाद पाकर श्रीजगन्नाथपुरीसे प्रस्थान किया।

श्रीजगन्नाथपुरीसे चलकर तीर्थयात्रियोंने कटक, भुवनेश्वर आदि स्थानोंका दर्शन किया। जब तीर्थ-यात्रा-ट्रेन कलकत्ता पहुँची तो हावड़ा स्टेशनपर बहुत बड़ी संख्यामें उपस्थित जन-समुदायने बाबूजीका स्वागत किया। इसके बाद वैद्यनाथधाम, गया आदि तीर्थस्थानोंमें भ्रमण करते हुए तीर्थ-यात्रा-ट्रेन तीन मास बाद २६-४-१९५६ को वाराणसी पहुँची, जहाँसे इसने सर्वप्रथम प्रस्थान किया था तीर्थ-यात्राके लिये। वाराणसी तीर्थ-यात्रा-ट्रेनका अन्तिम स्टेशन था और यहीं यात्राकी विराम-रेखा थी। यात्रियोंने बाबूजी और बाबाको प्रणाम किया, बहुत-बहुत कृतज्ञता व्यक्त की और सभी अपने-अपने स्थानको वापस चले गये। बाबूजी और बाबा भी वाराणसीसे गोरखपुर चले आये।

* * * * *

यह दिव्य चरण-पादुका

सहस्रारपद्मे तं त्रिकोणे परितिष्ठितम्।
सद्गुरु-पादुका-युग्मं स्वात्मरूपं सदाश्रये।।

सद्गुरु किंवा इष्टदेवकी पादुका-द्वयके आध्यात्मिक माहात्म्यका वर्णन अत्यन्त दुष्कर है। 'पादुका सहस्र' स्तवके रचयिता, विशिष्टाद्वैतके प्रसिद्ध दार्शनिक एवं सहृदय संत श्रीमद्वेंकटनाथजीका कथन है कि

निःशेषमम्बरतलं यदि पत्रिका स्यात्,
सप्तार्णवी यदि समेत्य मषी भवित्री।
वक्ता सहस्रवदनः पुरुषः स्वयं चेत्
लिख्येत रंगपति-पादुकयोर्प्रभावः।।

'यदि सम्पूर्ण आकाश पत्र (कागज) हो, यदि सप्त सागर संयुक्त रूपसे स्याही बन जावें, यदि सहस्रशीर्ष पुरुष स्वयं वक्ता हो, तो सम्भवतः श्रीरंगनाथ प्रभुकी पादुका-द्वयका प्रभाव लिखा जा सकता है।'

वे पादुका युग्मको सम्बोधित कर उसके स्वरूपका उद्घाटन करते हैं–

असूर्य-भेद्यां रजनीं प्रजाता-
मालोक-मात्रेण निवारयन्ती।
अमोघ-वृत्तिर्मणि-पाद-रक्षे
मुरद्विषो मूर्तिमती दया त्वम्।।

'हे पादुका-द्वय! तुम अनुग्रहकी मूर्तिमान स्वरूप हो। दिव्य प्रकाश-स्वरूपिणी होनेके कारण अलौकिक मणिके समान प्राणियोंके अविद्याकी उस अन्धकारमयी रात्रिको दूर कर देती हो, जिसे सूर्य भी निवारित नहीं कर सकता। तुम्हारा यह प्रभाव अमोघ है।'

उपर्युक्त श्लोकमें आध्यात्मिक जगतके एक निगूढ़ रहस्यकी ओर इशारा किया गया है।

गुरु-पादुका-द्वय जब सहस्रारमें प्रतिष्ठित होती है, तब निरन्तर स्निग्ध मधुमयी चन्द्र-रश्मियोंके समान परमानन्द बरसाती हुई जीवको आप्यायित कर देती है। भावुक भक्तका अज्ञान दूर होता है और दिव्य विमर्श प्रकाशित होता है। इससे स्थूल और सूक्ष्म शरीरोंके तत्त्वोंका शोधन प्राथमिक चरणमें ही हो जाता है। इसका विशद विवेचन शैव-तन्त्र-शास्त्रमें उपलब्ध होता है। यहाँ केवल संकेत-मात्र अभीप्सित है—

स्व-प्रकाश-शिवमूर्त्तिरेकिका,
तद्-विमर्श-तनुरेकिका तयोः।
सामरस्य-वपुरिष्यते परा
पादुका पर-शिवात्मनो गुरोः॥

'पर-शिव-रूपी गुरुकी पादुका-द्वयमें स्वप्रकाशात्मक अद्वितीय शिवमूर्ति है तथा साथमें विमर्शात्मक शक्ति-मूर्ति है। शिव शक्तिका सामरस्य एकात्मानुभूति अविनाभाव सम्बन्ध ही परा पादुका-युगल है।'

तथा—

स्वप्रकाश-वपुषा गुरुः शिवो
यः प्रसीदति पदार्थ-मस्तके।
तत्प्रसादमिह तत्त्वशोधनं
प्राप्य मोदमुपयाति भावुकः॥

'शिवरूपी गुरुकी पादुकायें जब भावुक भक्तके मस्तकपर सहस्रारमें सुशोभित होती हैं, तब वे अपने प्रकाशसे तत्त्वशोधन कर देती हैं। अतः उस भावुक भक्तको मोद मस्ती उपलब्ध होती है।'

पादुकोपासनाके मनोरम उदाहरण भरतजी हैं—

'नित पूजत प्रभु पाँवरी, प्रीति न हृदय समात।'

पादुका-सहस्रमें महात्मा श्रीवेंकटनाथजी कहते है।

रामपाद-सह-धर्मचारिणीं
पादुके निखिल पातकच्छिदम्।
त्वमशेष जगतामधीश्वरी
भावयामि भरताधिदैवतम्।।

'हे पादुका-द्वय! रामपदकी धर्मशीला सहचारिणीके रूपमें, समस्त पापोंके निवारिकाके रूपमें, सम्पूर्ण विश्वकी अधीश्वरीके रूपमें और भरतकी अधिदेवताके रूपमें तुम्हारी मैं भावना करता हूँ।

अतः

भरताय परं नमोऽस्तु तस्मै प्रथमोदाहरणाय भक्तिभाजाम्।
यदुपज्ञमशेषतः पृथिव्यां प्रथितो राघव-पादुका-प्रभावः।।

'उन भरतजीको जो अविचल भक्तिका निर्वहण करनेवाले पादुकोपासकोंमें प्रथम हैं, मैं बारम्बार प्रणाम करता हूँ। उन्होंने मौलिक रूपमें पृथ्वीपर राघव-पादुकाके प्रभावको सम्पूर्ण रीतिसे प्रदर्शित किया।'

प्रतिवर्ष गोरखपुरकी गीतावाटिकामें पौष शुक्ल नवमीको श्रीराधाबाबाके जन्म-दिवस-महोत्सवका शुभारम्भ उनकी पादुका-पूजनसे होता है। उस समय भावुक भक्तोंकी जो भावनायें होती हैं, वे निम्नोक्त 'पादुका-पञ्चक'में ग्रथित हैं—

सतत-वाञ्छित शरण-कांक्षी कृष्णकी मनुहार, प्रियतम,
भक्त-याञ्चा-कल्पतरु की कुसुम-भार-विहार, प्रियतम।
कमल-कोमल सुभग शीतल चरण-तल सिंगार, प्रियतम,
राधिकाकी पादुकाका कब मिलेगा प्यार, प्रियतम।।

प्रिय मनोरथ दिव्य मन्मथ प्रेम-सुरभित हार, प्रियतम,
लता-वेष्टित सुमन-शोभित कुञ्जमें अभिसार, प्रियतम।
वन-पालिका कर-तालिका जो खोलती है द्वार, प्रियतम,
राधिकाकी पादुकाका कब मिलेगा प्यार, प्रियतम।।

कुञ्ज-विहरत ध्वनित-नूपुर-मन्त्रकी झंकार, प्रियतम,
नख-चन्द्र-ज्योतित झिलमिली मधु-ज्योत्स्ना साकार प्रियतम।
प्रिय सुपूजित प्रेम-पूरित माधवी रसधार प्रियतम,
राधिकाकी पादुकाका कब मिलेगा प्यार प्रियतम।।

लुब्ध-अलिका मुग्ध विहरण प्रीतिमय संचार प्रियतम,
प्रणय-परिणत ललित प्रतिपद हृदयका संसार प्रियतम।
नित्य नूतन मदन केतन व्रज निकेतन सार प्रियतम,
राधिकाकी पादुकाका कब मिलेगा प्यार प्रियतम।।

क्वणित-नूपुर ध्वनित-वंशी शिञ्जिनी सहचार प्रियतम,
रेणु-रञ्जित रस-तरंगित सुमन-विपिन-विहार प्रियतम।
अनन्य निर्भर-गति प्रेमा-भक्तिका उपहार प्रियतम।
राधिकाकी पादुकाका कब मिलेगा प्यार प्रियतम।।

– प्राण नाथ शर्मा

पूज्य श्रीराधाबाबा की कृतियाँ

१ – अन्तर्वेदना

२ – श्रीकृष्ण लीला चिन्तन

३ – सत्संग सुधा

४ – प्रेम सत्संग सुधा माला

५ – चलौ री, आज ब्रजराज मुख निरखिये

६ – ब्रजलीलामें गाय

७ – जगज्जननी श्रीराधा

८ – केलिकुंज

९ – व्रजलीलाके प्रमुख नारीपात्र

१० – जय जय प्रियतम

११ – अनुराग परीक्षा लीला

१२ – कुन्दवल्ली भावकी लीला

१३ – राधा-मनोरथकी लीलाएँ

१४ – देवर्षि श्रीनारदपर श्रीवृषभानुनन्दिनीकी कृपा

१५ – भागवत-मकरन्द (श्रीमद्भागवत महापुराणके कतिपय दिव्य श्लोकोंका संचयन)

१६ – अन्य प्रचुर अप्रकाशित गद्य-पद्यात्मक साहित्य

पुस्तक प्राप्ति स्थान

: गोरखपुर :
साहित्य मन्दिर
श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार स्मारक समिति,
पो. गीतावाटिका,
गोरखपुर - २७३००६.

मनमोहन जाजोदिया
अजय सलेक्शन, बैंक रोड,
गोरखपुर - २७३ ००१

:वाराणसी:
श्रीहनुमानप्रसाद पोद्दार स्मृति सेवा ट्रस्ट,
दुर्गाकुण्ड रोड,
वाराणसी

:उदयपुर:
दिनेश कुमार अग्रवाल
आर ५/३१, जयश्री कालोनी,
तिलक स्कूल रोड, धूलकोट,
उदयपुर - ३१३ ००१

: मुम्बई :
भारतीय ग्रामोद्योग वस्त्र भण्डार
सिंहानिया वाडी,
१८७, दादी सेठ अग्यारी लेन,
मुम्बई - ४०००००२

:वृन्दावन:
खण्डेलवाल एण्ड सन्स
अठखम्बा बाजार,
वृन्दावन - २८११२१

:जयपूर:
धार्मिक साहित्य सदन
बुलियन बिल्डींग के अन्दर,
हल्दियोंका रास्ता,
जौहरी बाजार,
जयपुर (राज.) ३०२००३

: स्वर्गाश्रम:
विष्णु पुस्तक भण्डार
पो. स्वर्गाश्रम,
(ऋषिकेश) - २४९३०४,
जि. पौढ़ी गढ़वाल

: अयोध्या:
श्रीस्वामीशरण उपाध्याय
श्रीसीताराम भवन,
गोलाघाट चौराह,
अयोध्या (उ.प्र.)

: पटना:
श्रीनागा बाबा
ठाकुरवाडी,
मथुरा प्रसाद सिन्हा रोड,
कदम कुँआ, पटना (बिहार)

॥ श्रीहरिः ॥

गीतावाटिका प्रकाशन

पो. - गीतावाटिका, गोरखपुर - २७३ ००६

द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

1.	श्रीभाईजी - एक अलौकिक विभूति	श्रीभाईजी एवं श्रीसेठजीकी संक्षिप्त जीवनी	60.00
2.	भाईजी चरितामृत	भाईजीके शब्दोंमें उनके जीवन प्रसंग	50.00
3.	सरस पत्र	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	30.00
4.	व्रजभावकी उपासना	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	25.00
5.	परमार्थकी पगडंडियाँ	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	30.00
6.	सत्संगवाटिकाके बिखरे सुमन	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	30.00
7.	वेणुगीत	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	35.00
8.	समाज किस ओर जा रहा है	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	30.00
9.	प्रभुको आत्मसमर्पण	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	30.00
10.	भगवत्कृपा	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	5.00
11.	श्रीराधाष्टमी जन्म-व्रत महोत्सव	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	5.00
12.	शान्तिकी सरिता	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	20.00
13.	रासपञ्चाध्यायी	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	35.00
14.	पारमार्थिक और लौकिक सफलताके सरल उपाय	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	25.00
15.	क्या, क्यों और कैसे ?	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	30.00
16.	साधकोंके पत्र	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	30.00
17.	रोगोंके सरल उपचार	सम्पादक : भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	35.00
18.	भगवन्नाम और प्रार्थनाके चमत्कार	सम्पादक : भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	30.00
19.	मेरी अतुल सम्पति	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	10.00
20.	श्रीशिव - चिन्तन	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	25.00
21.	अन्तरंग वार्तालाप	भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार	30.00
22.	आस्तिकताकी आधार-शिलाएँ	श्रीराधा बाबा	35.00
23.	महाभागा व्रजदेवियाँ	श्रीराधा बाबा	30.00
24.	केलि - कुञ्ज	श्रीराधा बाबा	70.00
25.	परमार्थके सरगम	श्रीराधा बाबा	30.00
26.	पद-रत्नाकर - एक अध्ययन	श्रीश्यामसुन्दर दुजारी	30.00
27.	दिव्य हस्तलिखित संकेत		50.00

महज्जनों के भावोद्‌गार

राधा बाबा प्रेम, भक्ति और सत्यके प्रतीक। भक्ति मार्गकी जीवन्त मूर्ति। एक स्थिति है, जहाँ ब्रह्म सिवाय और कुछ भी नहीं। द्वैत, अद्वैत, ज्ञान, भक्ति सब एक ही है। वही है, जो स्थिति राधा बाबा की है।

श्रीआनन्दमयी माँ

'जानेहु संत अनंत समाना' यह मन्त्र सत्य ही प्रतीत होय है। सुकृत पुंज बाबा (श्रीराधा बाबा) के विषय में तौ कुछ कहते ही नही बने।

'मन समेत जेहि जान न बानी'...।

पूज्य पण्डितजी श्रीगयाप्रसादजी महाराज